एक कहानी कई रंग ः

सिपाही और मौत जैसी कहानियॉ

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता
2022

Cover Title : Sipahi Aur Maut Jaisi Kahaniyan-18 (Soldier and Death Like Stories-18)
Cover Page picture : Soldier
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5
सिपाही और मौत जैसी कहानियॉ 7
1 सिपाही और मौत 9
2 सिपाही और शैतान 28
3 ताश खेलने वाला 32
4 ताश खेलने वाला 37
5 बोतल में बन्द मौत 56
6 आजा मेरे थैले में कूद जा 61
7 भालू की खाल 79
8 शैतान और उसकी दादी 91

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2000,** तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियॉ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं। तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"।

कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में ये कहानियॉ कुछ इसी तरह की कहानियॉ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियॉ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि वैसी सारी कहान्यिॉ हम यहॉ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि वैसी कहानियॉ हम एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में हम **17** पुस्तकें पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं। यह इस सीरीज़ की **18**वीं पुस्तक है "सिपाही और मौत जैसी कहानियॉ"। इस सीरीज़ में प्रकाशित कुछ पुस्तकों की सूची इस पुस्तक के अन्त में दी हुई है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुॅची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

सिपाही और मौत जैसी कहानियॉ

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं। पर कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ये सब कहानियॉ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियॉ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे।

इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियॉ कही गयीं हैं। इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"। "एक कहानी कई रंग–1" में "बिल्ला और चुहिया" जैसी कहानियॉ थीं।[1] इसकी तीसरी पुस्तक में "टौम थम्ब" जैसी कहानियॉ दी गयीं थीं। इसमें बहुत छोटे बच्चे के कारनामों की कथाऐं हैं।[2]

फिर इस सीरीज़ में अभी तक कुल **17** पुस्तकें प्रकाशित की गयीं हैं जिनकी सूची इस पुस्तक के पीछे दी हुई है। अब यह प्रस्तुत है इस सीरीज़ की **18**वीं पुस्तक "सिपाही और मौत" जैसी कहानियॉ। सिपाही और मौत रूस की एक बहुत ही लोकप्रिय कथा है पर कुछ कुछ वैसी ही कथाऐं और जगहों पर भी कही सुनी जाती हैं।

"सिपाही और मौत" रूस की एक बहुत ही मशहूर कहानी है जिसमें एक सिपाही मौत को चकमा देता है। ऐसी कुछ कहानियॉ और भी हैं जिनमे दूसरे लोग मौत को चकमा देते हैं। इन कहानियों में से एक में एक आदमी जो जीसस या किसी और दैवीय ताकत की सहायता से मौत को पकड़ लेता है वह उसको किसी थैले में बन्द कर लेता है या फिर किसी और चीज़ की सहायता से जैसे ताश आदि की सहायता से किसी और चीज़ में बन्द कर लेता है। मौत को पकड़ना आसान नहीं है पर जब वह पकड़ में आ जाती है देखने वाली बात यह है कि तब क्या होता है...

तो लो पढ़ो सिपाही और मौत कथा और वैसी ही कुछ और लोक कथाऐं...

---

[1] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"

[2] "One Story Many Colors-3" – like "Tom Thumb"

1 सिपाही और मौत[3]

सिपाही और मौत रूस की एक बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा है जिसमें एक सिपाही मौत को अपने पास कैद में रख लेता है फिर देखो कि वह क्या मजा बॉधता है।

एक बार की बात है कि एक सिपाही था जिसने भगवान और राजा दोनों की पूरे पच्चीस साल तक सेवा की थी और आखीर में उसने केवल तीन बिस्किट कमाये थे। अब वह घर लौट रहा था।

जब वह जा रहा था तो सोचता जा रहा था "भगवान देखो मैं यहॉ हूॅ। मैंने ज़ार की पच्चीस साल तक सेवा की। वहॉ से मुझे खाना और कपड़ा मिलता रहा। पर आखिर मैं किस चीज़ के लिये ज़िन्दा रहा? मैं ठंडा हूॅ और भूखा हूॅ। खाने के लिये मेरे पास केवल तीन बिस्किट हैं।"

इसी तरह से वह सोचता चला आ रहा था कि उसको लगा कि वह वह जगह छोड़ कर कहीं और चला जाये जहॉ भी उसकी किस्मत उसे ले जाये।

चलते चलते उसे एक बहुत ही गरीब भिखारी मिला। उसने उससे भीख मॉगी तो उसने उसे एक बिस्किट दे दिया। वह और

---

[3] The Soldier and Death – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief. 73 Tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com in three parts. This story is in its third part.

आगे चला तो उसको एक और गरीब भिखारी मिला। उसने उसको बहुत नीचे तक सिर झुकाया और उससे भीख मॉगी तो उसने उसको भी एक बिस्किट दे दिया। अब उसके पास केवल एक बिस्किट ही बचा था।

वह और आगे चला तो उसको एक तीसरा भिखारी मिला। उसने भी उसको नीचे तक झुक कर नमस्ते की और भीख मॉगी।

सिपाही ने अपना आखिरी तीसरा बिस्किट निकाला और सोचा "अगर मैं इसको यह सारा बिस्किट दे देता हूॅ तो मेरे पास तो कुछ रह ही नहीं जायेगा। और अगर में इसको आधा बिस्किट देता हूॅ तो जब यह अपने दूसरे साथी भिखारियों से मिलेगा तो देखेगा कि उनके पास तो पूरे पूरे बिस्किट हैं तो इसको बुरा लगेगा।

इससे अच्छा तो यही है कि मैं इसे भी पूरा बिस्किट ही दे दूॅ। मैं अपना गुजारा किसी और तरह कर लूॅगा।"

सो उसने उसको अपना तीसरा आखिरी बिस्किट निकाला और उसे दे दिया और अब उसके पास कुछ भी नहीं बचा था।

बिस्किट ले कर उस बूढ़े ने उससे पूछा — "ओ भले आदमी। बता तेरी क्या इच्छा है? तुझे क्या चाहिये? मैं तेरी सहायता करूॅगा।"

सिपाही बोला — "भगवान तुम्हारा भला करे। मैं तुमसे कोई चीज़ कैसे ले सकता हूॅ। तुम तो वैसे ही बूढ़े और गरीब हो।"

बूढ़ा बोला — "तू मेरी गरीबी के बारे में सोचना छोड़। बस तू मुझे यह बता दे कि तुझे क्या चाहिये और मैं तेरी अच्छाई के मुताबिक तुझे वही चीज़ दे दूँगा।"

सिपाही बोला — "मुझे कुछ नहीं चाहिये। अगर तुम्हारे पास ताश हों तो बस मुझे रखने के लिये एक जोड़ी ताश दे दो।"

अब यह बूढ़ा तो जीसस क्राइस्ट था जो एक बूढ़े का रूप रखे धरती पर घूम रहा था। बूढ़े ने अपनी छाती वाली जेब में हाथ डाला ताश की एक गड्डी निकाली और उसको देते हुए कहा — "लो यह लो। इन ताशों के साथ तुम जिस किसी के साथ भी खेलोगे तुम वह बाजी जीत जाओगे।

और लो यह एक थैला लो। जो भी तुम्हें रास्ते में मिलेगा चाहे वह जंगली जानवर हो या चिड़िया हो जिसको भी तुम पकड़ना चाहोगे बस इस थैले से यह कहना "ओ चिड़िया या जानवर आ मेरे थैले में कूद जा।" और तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी।"

सिपाही ने उसे धन्यवाद कहा और उससे ताश की गड्डी और थैला ले कर आगे चला। वह चलता गया चलता गया और चलता गया, शायद पास शायद दूर, शायद कुछ देर या फिर शायद बहुत देर कि वह एक झील के पास आ पहुँचा। उस झील में तीन जंगली बतखें तैर रही थीं।

अचानक सिपाही को उस बूढ़े भिखारी के दिये हुए थैले की याद आ गयी तो उसने सोचा कि "क्यों न मैं इस थैले को यहीं जॉच कर देख लूँ।"

उसने उसे निकाला खोला और बोला — "ओ जंगली बतखों मेरे थैले में कूद जाओ।" जैसे ही उसके मुँह से ये शब्द निकले तुरन्त ही तीनों बतखें झील से आ कर उसके थैले में गिर गयीं। सिपाही ने अपना थैला बन्द किया और फिर अपने रास्ते चल दिया।

चलते चलते अब वह एक शहर में आ पहुँचा। वहॉ वह एक खाने की जगह गया और वहॉ आ कर उसने सराय के मालिक को एक बतख दी और उससे कहा कि वह उसे उसके लिये खाने में बना दे। "इसकी मजदूरी में मैं तुम्हें एक और बतख दूँगा। और यह तीसरी बतख लो और इसके बदले में मुझे वोदका[4] दे दो।"

इस तरह से सिपाही उस सराय में एक लौर्ड की तरह बैठा। आराम से खाया पिया और भुनी हुई बतख की दावत खायी। अचानक उसको लगा कि वह खिड़की के बाहर झॉक कर देखे।

सो उसने जब उधर देखा तो देखा कि उधर तो एक बहुत बड़ा महल खड़ा हुआ था पर उसका कोई भी शीशा साबुत नहीं था। यह देख कर उसने सराय के मालिक से पूछा — "यह क्या बात है। यह कैसा महल है। यह इतना खाली खाली क्यों है?"

[4] Vodka is a Russian liquor.

सराय का मालिक बोला — "अरे आपको नहीं पता? हमारे ज़ार ने यह महल अपने लिये बनवाया था पर वे इसमें रह ही नहीं सके। अब सात साल से यह ऐसे ही खाली पड़ा हुआ है। कुछ शैतानी आत्माऐं इसमें इसमें रहने वाले को बाहर जाने पर मजबूर कर देती हैं। वे इसमें किसी को रहने ही नहीं देतीं।

हर रात यहॉ कुछ शैतानों की मीटिंग होती है। वे लड़ते हैं झगड़ते हैं नाचते हैं ताश खेलते हैं और हर तरह का बुरा काम करते हैं।"

सो सिपाही वहॉ से उठ कर ज़ार के पास गया और बोला — "योर मैजेस्टी। अगर आपको बुरा न लगे तो मैं एक रात आपके खाली महल में गुजार लूँ।"

ज़ार बोला — "भगवान तुम्हें सुखी रखे। क्या बात कर रहे हो भाई? तुम्हारा मतलब क्या है? तुम्हारे जैसे कई हिम्मत वाले लोगों ने वहॉ रात गुजारने की कोशिश की है पर अभी तक वहॉ से कोई बच कर नहीं आ सका है।"

सिपाही बोला — "योर मैजेस्टी। एक रूसी सिपाही पानी में डूब नहीं सकता आग में जल नहीं सकता। मैंने भगवान और सरकार की पच्चीस साल सेवा की है और उसकी वजह से कभी मरा नहीं। और अब एक रात आपकी नौकरी कर लूँगा तो क्या मैं मर जाऊँगा? नहीं कभी नहीं।"

ज़ार फिर बोला — "फिर भी मैं तुमसे कहे देता हूॅ कि जो कोई भी आदमी रात को उस महल में जाता है सुबह को उसकी हड्डियॉ ही मिलती हैं।"

पर सिपाही अपने इरादे का पक्का था बस उसको ज़ार के महल में जाने की इजाज़त चाहिये। ज़ार ने कहा "ठीक है अगर तुम जाना चाहते हो तो जाओ। भगवान तुम्हारी रक्षा करें। तुम वहॉ रात को रहना अगर तुम वहॉ रात को रह लिये तो तुम आजाद हो मैं तुम्हें नहीं रोकूॅगा।"

सो सिपाही महल में घुसा और एक बड़े से कमरे में जा कर बैठ गया। उसने अपना थैला और अपनी तलवार निकाल कर रख दी। थैला एक कोने में रख दिया और तलवार एक खूॅटी पर टॉग दी।

फिर वह एक कुर्सी पर बैठ गया। अपनी जेब में से तम्बाकू निकाला अपना पाइप सुलगाया और आराम से उसमें से धुॅआ छोड़ने लगा।

करीब करीब आधी रात को हमें पता नहीं कहॉ से कई शैतान वहॉ आ गये। कुछ उनमें से दिखायी दे रहे थे कुछ दिखायी नहीं दे रहे थे। वहॉ आ कर उन्होंने खूब हल्ला गुल्ला मचाया। फिर वे जंगली संगीत पर खूब नाचे।

फिर वे चिल्लाये — "अरे तुम्हारी क्या छुट्टी कर दी गयी है। क्या तुम हमारे साथ ताश खेलोगे?"

सिपाही बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। लो ये रहे ताश। आओ शुरू करते हैं।" कह कर उसने अपनी जेब से ताश निकाल कर बॉट दिये।

ताश का खेल शुरू हुआ। एक बाजी खेली गयी तो सिपाही जीत गया। दूसरी बाजी खेली गयी पर फिर वही हुआ। सिपाही जीत गया। शैतानों की कोई भी चाल उनको जिता न सकी। सिपाही सारे पैसे जीतता चला गया। उसने उनके सारे पैसे समेट लिये।

शैतान बोले — "ओ सिपाही रुक जाओ। हमारे पास अभी भी साठ औंस चॉदी और चालीस औंस सोना बाकी है। हम उसे आखिरी बाजी पर लगायेंगे।" कह कर उन्होंने एक शैतान लड़के को चॉदी लाने के लिये भेज दिया।

अब एक नया खेल शुरू हुआ। उस शैतान लड़के ने इधर उधर खूब ताक झॉक की और फिर वापस आ कर बड़े शैतान को बताया "बाबा कोई फायदा नहीं है। अब हमारे पास कुछ नहीं है।"

बाबा ने शैतान लड़के से कहा — "तू जा और जा कर सोना ले कर आ।"

लड़का चला गया और सब जगह सोना ढूँढने लगा। एक गड्ढा पूरा का पूरा खाली कर दिया पर फिर भी वहॉ उसको कुछ भी नहीं मिला। सिपाही ने उनका सब कुछ जीत लिया था।

शैतान लोग इस तरह से अपना सारा पैसा गॅवाने पर बहुत गुस्सा थे सो उन्होंने सिपाही को पीटना शुरू कर दिया और चिल्लाये — "इसको कुचल दो भाइयो इसको खा लो।"

यह सुन कर सिपाही बोला — "देखते हैं कि जब खाने की बात आती है तो किसकी बात जीतती है।" कह कर उसने अपना थैला खोल दिया और उनसे पूछा "यह क्या है?"

वे बोले "यह तो एक थैला है।"

"भगवान के जादू से तुम सब इसमें चले जाओ।"

यह कहते ही सारे शैतान उसमें आ कर गिर गये।

वे इतने सारे थे कि तुम उन्हें गिन भी नहीं सकते। सिपाही ने वह थैला कस कर बन्द किया उसे एक खूॅटी पर लटकाया और सोने के लिये लेट गया।

सुबह को ज़ार ने अपनो लोगों को बुलवाया और उनसे कहा — "मेरे पास आओ और मुझे यह देख कर बताओ कि वह सिपाही कैसा कर रहा है। अगर शैतानों ने उसे खा लिया है तो कम से कम मुझे उसकी हड्डियॉ ही ला कर दो।"

वे तुरन्त ही महल गये तो उन्होंने देखा कि सिपाही तो अपना पाइप पीता हुआ खुश खुश इधर उधर घूम रहा है। उन्होंने उससे पूछा — "सिपाही कैसे हो तुम? हम तो तुम्हें यहॉ ज़िन्दा देखने की आशा ही नहीं कर रहे थे। तुम्हारी रात कैसी गुजरी? शैतानों से तुमने कैसा सौदा किया?"

सिपाही बोला — "कौन से शैतान। आओ और अन्दर आ कर देखो मेरे पास कितना सोना चॉदी है। मैंने उन सबको हरा दिया। देखो कितना बड़ा ढेर है यह।"

ज़ार के नौकरों ने जब उसे देखा तो वे तो बहुत आश्चर्य में पड़ गये। सिपाही ने उनसे कहा कि वह उसको दो सोने चॉदी का काम करने वाले सुनार ला कर दें। अपने साथ में वे एक लोहे का हथौड़ा और दूसरे औजार भी ले कर आयें।

वे जल्दी जल्दी भागे भागे सुनार के पास गये और दो सुनारों को लोहे के हथौड़ों और दूसरे औजारों को साथ ले कर तुरन्त ही हाजिर हो गये।

सिपाही बोला — "यह थैला लो और इसको पुराने तरीके से ठोक ठोक कर अच्छी तरह पीटो।"

सुनारों ने उससे वह थैला लिया और आपस में बात की — "उफ़ यह थैला कितना भारी है। इसके अन्दर तो शैतान होने चाहिये।"

तुरन्त ही उसके अन्दर से शैतान चीखे — "ओ हमारे बाप हॉ हॉ हम ही हैं। हमारी सहायता करो।"

बहुत जल्दी ही शैतानों को पता चल गया कि वे इस तरह का व्यवहार सहन नहीं कर सकते थे सो उन्होंने चिल्लाना शुरू किया — "हमारे ऊपर दया करो। हमको बाहर निकालो ओ सिपाही हमको खुली हवा में सॉस लेने दो।

इस दुनियॉ के आखीर तक हम तुम्हें नहीं भूलेंगे और इस महल के अन्दर भी अबसे कोई शैतान नहीं घुसेगा। हम सबको इसमें घुसने से मना कर देंगे – सबको मानी सबको। हम सबको वहॉ से सौ वर्स्ट[5] दूर रखेंगे।"

यह सुन कर सिपाही ने सुनारों को उनको पीटने से रोक दिया। और जैसे ही उसने थैला खोला सारे शैतान बिना पीछे देखे हुए दौड़ कर वहॉ से नरक भाग गये।

पर सिपाही कोई बेवकूफ नहीं था। जैसे ही वे बाहर निकल कर भाग रहे थे उसने एक बड़े शैतान को उसके पंजों से पकड़ लिया और बोला — "यहॉ आओ। तुम मुझे लिख कर दो कि तुम मेरी हमेशा वफादारी के साथ सेवा करोगे।"

उस शैतानी आत्मा ने उसे अपने खून से यह लिख कर दे दिया और वहॉ से भाग गया।

अपनी पूरी ताकत के साथ सारे शैतान बड़े भी छोटे भी सब एक जलते हुए गड्ढे में चले गये पर उसके बाद उन्होंने अपने उस जलते हुए गड्ढे के चारों तरफ पहरा लगा दिया और उनको कड़ी हिदायत दे दी कि वे सावधानी से वहॉ पहरा दें ताकि वह सिपाही और उसका थैला वहॉ कहीं आस पास भी दिखायी न दें।

[5] Verst is a Russian measure of length. 1 Verst = .66 mile (1.1 Kms)

यह सब कर के सिपाही और ज़ार के नौकर लोग ज़ार के पास आये और सिपाही ने उसको कोई कहानी बतायी कि कैसे वह महल शैतानों से आजाद हुआ।

ज़ार ने सिपाही को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा — "तुम मेरे पास ही रहो। मैं तुम्हें अपने भाई की तरह से रखूँगा।"

सो वह सिपाही अब ज़ार के पास ही रहने लगा। अब उसके पास हर चीज़ बहुतायत में थी। अब तो वह अमीरी में लोट रहा था सो अब उसने सोचा कि अब उसको शादी कर लेनी चाहिये। सो उसने शादी कर ली और भगवान की कृपा से एक साल बाद उसके एक बेटा भी हो गया।

इत्तफाक की बात कि इसके बेटे को बहुत बुरी बीमारी लग गयी – इतनी भयानक कि कोई डाक्टर उसे ठीक नहीं कर सका। वह बीमारी किसी भी डाक्टर की जानकारी में नहीं थी।

तो सिपाही को उस बड़े शैतान का ध्यान आया और उस समझौते के साथ जो उसने उसके साथ किया था कि "मैं हमेशा तुम्हारी वफादारी से सेवा करूँगा।" उसने उसके बारे में सोचा और कहा "मेरा बड़ा शैतान क्या कर रहा है?"

उसके याद करते ही वही बड़ा शैतान वहॉ उसके सामने आ खड़ा हुआ और पूछा — "सरकार आपकी क्या इच्छा है?"

सिपाही बोला — "मेरा छोटा सा बच्चा बहुत बीमार है। क्या तुम जानते हो कि वह कैसे ठीक हो सकता है?"

शैतान ने अपनी जेब में हाथ डाला और एक गिलास निकाला। उसमें उसने ठंडा पानी डाला और बीमार बच्चे के सिर पर रख दिया और सिपाही से कहा — "यहॉ आओ। इस पानी में देखो।"

सिपाही ने उस पानी में देखा तो शैतान ने पूछा "तुम इसमें क्या देखते हो।"

सिपाही बोला — "मैं यह देख रहा हूॅ कि मेरे बेटे के पैरों के पास मौत खड़ी है।"

शैतान बोला — "क्योंकि मौत इसके पैरों के पास खड़ी है इसलिये यह बच जायेगा। अगर मौत इसके सिर पर खड़ी होती तो यह एक दिन भी ज़िन्दा नहीं रहता।"

सो शैतान ने पानी का वह गिलास लिया और उसका पानी सिपाही के बेटे के ऊपर डाल दिया।उसका बेटा उसी समय ठीक हो गया।

सिपाही बोला — "तुम यह गिलास मुझे दे दो फिर मैं तुम्हें किसी भी बात के लिये परेशान नहीं करूॅगा।" शैतान ने उसको गिलास दे दिया और सिपाही ने उसे समझौते वाला कागज दे दिया। शैतान वहॉ से चला गया।

अब सिपाही को जादू आ गया तो वह बड़े बड़े लोगों को ठीक करने लगा। वह उनके पास जाता गिलास उनके सिर पर रखता और तुरन्त ही जान लेता कि वह आदमी मरेगा या बचेगा।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि ज़ार खुद बीमार हो गया तो सिपाही को बुलवाया गया। सो उसने गिलास में ठंडा पानी भरा और ज़ार के सिर के ऊपर रखा तो देखा कि मौत तो ज़ार के सिर पर खड़ी है।

सिपाही बोला — "योर मैजेस्टी। इस दुनियॉ में कोई ऐसा नहीं है जो आपको ठीक कर सके। मौत आपके सिर पर खड़ी है और अब आपके पास केवल तीन घंटे की ज़िन्दगी ही बची है।"

जब ज़ार ने यह सुना कि उसके पास केवल तीन घंटे की ज़िन्दगी है तो वह सिपाही पर बहुत गुस्सा हो गया।

वह उस पर चिल्ला कर बोला "क्या क्या? तुमने कितने सारे लोगों को ठीक किया है और तुम मेरे लिये कुछ नहीं कर सकते। क्या तुम जानते हो कि मैं तुम्हें अभी इसी वक्त मरवा सकता हूँ?"

सो सिपाही ने सोचा और सोचा और सोचा कि उसे क्या करना चाहिये। बहुत सोचने के बाद उसने मौत को ललकारा — "ओ मौत तू ज़ार को मेरी ज़िन्दगी दे दे और उनकी बजाय मुझे ले ले। क्योंकि अब मेरे लिये यह कोई मायने नहीं रखता कि मैं मरूँ या जियूँ। क्योंकि बजाय यह बेरहम सजा भुगतने के मेरे लिये वही ज़्यादा अच्छा होगा कि मैं अपनी मौत मरूँ।"

यह कह कर उसने फिर से गिलास में देखा तो देखा कि मौत ज़ार के पैरों के पास खड़ी हुई है। फिर उसने गिलास का पानी

लिया और ज़ार के ऊपर छिड़क दिया। ज़ार बिल्कुल ठीक हो गया।

यह कर के सिपाही बोला — "अब ओ मौत। तू मुझे तीन घंटे की मोहलत दे ताकि मैं अपने घर जा सकूँ और अपनी पत्नी और बेटे से विदा ले सकूँ।"

मौत बोली — "ठीक है जा तुझे तीन घंटे दिये।"

घर पहुँच कर सिपाही अपने बिस्तर पर लेट गया और बीमार पड़ गया और जब मौत उसके बिल्कुल पास खड़ी थी तो उसने सिपाही से कहा — "ओ सिपाही तू अब अपने परिवार से विदा कह ले। इस दुनियॉ में रहने के लिये तेरे पास अब केवल तीन मिनट बचे हैं।"

यह सुन कर सिपाही ने अपने तकिये के नीचे से अपना थैला निकाला उसे खोला और मौत से पूछा "यह क्या है?"

मौत बोली "एक थैला।"

सिपाही तुरन्त बोला — "अगर यह एक थैला है तो आजा इसमें कूद जा।" और मौत तुरन्त ही उस थैले में चली गयी।

सिपाही तो बीमार था फिर भी वह अपने बिस्तर से कूद कर उठ गया। थैले को कस कर बन्द किया अपने कन्धे पर डाला और ब्रियान्स्की[6] जंगल चल दिया। यह सबसे घना जंगल था। वहॉ ले

[6] Bryanski Woods

जा कर उसने उस थैले को एक ऐस्पन के पेड़ पर उसकी सबसे ऊॅची शाख पर टॉग दिया और घर चला गया।

उस दिन के बाद से दुनियॉ में कोई नहीं मरा। लोग पैदा तो होते थे और पैदा होते भी रहे पर वे मरे कभी नहीं। इस तरह से कई साल बीत गये। सिपाही ने अपना वह थैला वहॉ से उतारा नहीं और धरती पर कोई मरा नहीं।

एक दिन वह शहर गया तो उसको वहॉ एक बहुत ही बूढ़ी औरत मिली। वह इतनी बुढ़िया थी कि जिस तरफ भी हवा चलती थी वह उधर ही को झुक जाती थी। सिपाही के मुॅह से निकला "ओह यह कितनी बूढ़ी है। यह अभी तक ज़िन्दा है अब तो इसके मरने का भी समय आ गया।"

बुढ़िया बोली — हॉ। मेरे मरने का समय आया था पर उस बात को तो बहुत दिन बीत गये अब तो वह चला भी गया। उस समय जब तुमने मौत को अपने थैले में बन्द किया था मेरी ज़िन्दगी का केवल एक घंटा रह गया था।

मैं कुछ आराम पा कर बहुत खुश होती। पर जब तक मैं मरूॅगी नहीं तब तक यह जमीन भी मुझे नहीं लेगी और ओ सिपाही तू भगवान की नजरों में पापी ठहराया जायेगा। क्योंकि इस धरती पर कोई भी ऐसा आदमी इतना दुखी नहीं है जितनी कि मैं।"

सिपाही वहीं रुक गया और सोचने लगा "यह ज़्यादा अच्छा होगा अगर मैं मौत को बाहर निकाल दूँ। हो सकता है कि मैं भी मर जाऊँ। इसके अलावा मेरी आत्मा पर बहुत सारे पाप भी तो हैं।

इसलिये जब तक मैं ताकतवर हूँ मेरे लिये यही ज़्यादा अच्छा रहेगा कि मैं इस धरती पर रहते हुए उनका बोझ सहूँ। क्योंकि जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा तब तो मेरे लिये किसी दुख को सहना और भी मुश्किल हो जायेगा।"

सो वह वहॉ से ब्रियान्स्की जंगल पहुँचा और उसी ऐस्पन के पेड़ के पास पहुँचा जहॉ उसने अपना थैला लटकाया था। उसने देखा कि उसका थैला तो उस पेड़ पर बहुत ऊँचा लटका हुआ था। चारों तरफ से हवा उसको अपने थपेड़ों से बहुत ज़ोर ज़ोर से हिला रही थी।

उसने पूछा — "ओ मौत क्या तुम अभी तक ज़िन्दा हो?"

थैले में से एक बहुत ही धीमी सी आवाज आयी "हॉ पिता जी मैं अभी भी ज़िन्दा हूँ।"

सो सिपाही ने उस थैले को उतारा उसे खोला और उसमें से मौत को बाहर निकाल दिया। वह खुद अपने बिस्तर पर लेट गया। उसने अपनी पत्नी और बेटे को विदा कहा और फिर मौत से प्रार्थना की कि वह उसको अपने अन्दर समेट ले।

पर वह तो अपने पैरों की पूरी ताकत के साथ बाहर की तरफ यह कहती हुई भाग गयी "जाओ तुमको तो शैतान ही मारेंगे। मैं तुम्हें नहीं मारूँगी।"

इस तरह सिपाही ज़िन्दा रहा और तन्दुरुस्त रहा। फिर उसने सोचा कि "क्या मैं खुद ही उस जलते हुए गड्ढे की तरफ जाऊँ क्योंकि तब वे शैतान मुझे गन्धक में फेंक देंगे जब तक मेरे पाप पिघल कर न बह जायें।"

सो उसने फिर से सबसे विदा ली अपना थैला उठाया और सीधा जलते हुए गड्ढे की तरफ चल दिया। वह चलता गया चलता गया, शायद पास शायद दूर, शायद पहाड़ी पर चढ़ता हुआ या फिर पहाड़ी से उतरता हुआ, शायद थोड़ी देर तक या फिर ज़्यादा देर तक।

अन्त में वह ऐबिस[7] तक आ पहुँचा। उसने देखा कि वहॉ उसके चारों तरफ तो बहुत सारे पहरेदार खड़े हैं। जब वह उसके फाटक पर पहुँचा तो एक शैतान ने पूछा "कौन आ रहा है?"

"एक अपराधी आत्मा दुख पाने के लिये।"

"तुम यहॉ क्यों आये हो? और तुम्हारे पास यह क्या है?"

"एक थैला।"

यह सुने ही शैतान अपनी पूरी ताकत से चीखा जिसने आस पास की जगह को हिला कर रख दिया। सारी शैतानी आत्माऐं खड़े

[7] Abyss – a deep or seemingly bottomless chasm

हो कर अपने न टूटने वाली चटकनियों वाली खिड़कियों से फाटक के बाहर झॉकने लगीं।

सिपाही ने उस जलते हुए गड्ढे का एक चक्कर लगाया और उस गड्ढे के मालिक को पुकारा — "मेहरबानी कर के मुझे अन्दर घुसा लो। मैं तुम्हारे पास अपने पापों की सजा भुगतने के लिये आया हूॅ।"

"नहीं मैं तुम्हें अन्दर नहीं आने दूॅगा। तुम्हारी जहॉ इच्छा हो वहॉ चले जाओ। यहॉ तुम्हारे लिये कोई जगह नहीं है।"

"ठीक है अगर तुम मुझे सजा नहीं भुगतने देते तो कम से कम मुझे तुम दो सौ आत्माऐं ही दे दो। मैं उनको भगवान के पास ले जाऊॅगा। तब भगवान शायद मेरे पापों को माफ कर दें।"

गड्ढे के मालिक ने कहा — "मैं तुम्हें पचास आत्माऐं और दूॅगा बस तुम यहॉ से चले जाओ।"

उसने दो सौ पचास आत्माऐं गिन कर उनको अपने पिछले दरवाजे से उस सिपाही को देने का हुक्म दिया ताकि वह उसे देख न सके। सिपाही ने वे दो सौ पचास अपराधी आत्माऐं इकट्ठी कीं और उनको ले कर वह स्वर्ग के दरवाजे पर पहुॅचा।

अपोसिल्स[8] ने उसको देखा और जीसस से कहा — "एक सिपाही या कोई और नरक की दो सो पचास आत्माओं के साथ यहॉ आया हुआ है।"

जीसस ने कहा — "उन आत्माओं को स्वर्ग में ले जाओ पर उस सिपाही को वहॉ मत ले जाना।"

पर सिपाही ने अपना थैला एक अपराधी आत्मा को दे रखा था और उससे कह रखा था — "तुम यहॉ देखते रहना। जैसे ही तुम स्वर्ग में घुसो वैसे ही तुम कहना "ओ सिपाही थैले के अन्दर कूद जाओ।"

स्वर्ग के दरवाजे खुले और उन आत्माओं ने स्वर्ग में घुसना शुरू किया। यह अपराधी आत्मा भी अन्दर गयी जिसके हाथ में सिपाही का थैला था पर स्वर्ग जाने की खुशी में वह सिपाही को उस थैले के अन्दर रखना भूल गया।

इस तरह से सिपाही बाहर ही पीछे छूट गया और दोनों में से किसी भी जगह अपना घर नहीं पा सका। वह बहुत दिनों तक ऐसे ही इधर उधर घूमता रहा क्योंकि उसको अभी दुनियॉ में और भी रहना था।

बहुत दिनों बाद जा कर वह मरा।

[8] Jesus had twelve disciples. Those twelve disciples were called Apostles. Their names are given at the back of this book

2 सिपाही और शैतान[9]

यह लोक कथा भी यूरोप के ऐस्टोनिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक शैतान को शहर से बाहर एक सिपाही मिल गया। उसने सिपाही से कहा — "मुझे ज़रा शहर घुमा दो क्योंकि मैं वहाँ अकेला नहीं जा सकता।

हालाँकि वहाँ अकेले जाने में मुझे बहुत अच्छा लगता पर ये दो आँखों वाले कुत्ते मुझे हर सड़क पर घेर लेते हैं। और फिर जैसे ही मैं शहर में घुसता हूँ तो वे मुझ पर हमला कर देते हैं।"

सिपाही बोला — "मैं तुम्हें खुशी से वहाँ ले चलूँगा पर तुम्हें मालूम है कि बिजनैस तो बिजनैस है वह बिना पैसे के नहीं होता।"

शैतान बोला — "तुम्हें क्या चाहिये?"

सिपाही बोला — "कुछ ज़्यादा नहीं क्योंकि तुम्हारे पास तो बहुत सारे पैसे हैं। अगर तुम मेरा यह लम्बी बाँहों वाला दस्ताना पैसों से भर दोगे तो बस मेरे लिये वही काफी है।"

शैतान बोला "ओह इतना तो मेरी जेब में ही है।" और उसने उसका वह लम्बी बाँहों वाला दस्ताना ऊपर तक भर दिया।

---

[9] The Soldier and the Devil – a folktale from Estonia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/hoe/hoe2-27.htm by Jannsen.
Taken from the book "The Hero of Esthonia", by William Forsell Kirby. London, 1895. 2 vols. This tale is in Vol 2.

उसके बाद सिपाही बोला "मैं नहीं जानता कि मैं तुमको कहॉ रखूँ। पर ज़रा रुको। तुम ऐसा करो कि तुम मेरे इस कन्धे पर लटकाने वाले थैले में बैठ जाओ। तुम यहॉ और किसी भी जगह से ज़्यादा सुरक्षित रहोगे।"

"यह ठीक है पर तुम्हारे इस थैले में तो तीन रस्सियॉ हैं। इस तीसरी वाली रस्सी को मत बॉधना वरना वह मेरे लिये ठीक नहीं होगा।"

"ठीक है। तुम बैठो तो।"

सो वह शैतान उसके उस थैले में बैठ गया। पर वह सिपाही उन लोगों में से था जो अपना वायदा नहीं निभाते। जैसे ही वह शैतान उस थैले में बैठा उसने तीनों रस्सियों को कस कर बॉध दिया।

और यह कहता हुआ शहर की तरफ चल दिया कि किसी सिपाही को शहर में किसी खुली रस्सी के साथ नहीं जाना चाहिये। तुम क्या सोचते हो कि अगर मेरा कौरपोरल मुझे इस तरह गन्दे तरीके से देखेगा तो क्या वह तुम्हारी वजह से मुझे माफ कर देगा।

सिपाही का एक दोस्त लोहार था जो शहर के दूसर कोने में रहता था। वह उस शैतान को अपने थैले मे ले कर सीधा उसी के पास चला गया।

वहॉ जा कर वह उससे बोला — "दोस्त ज़रा मेरे थैले को अपने लोहा पीटने की जगह पर रख कर पीट कर मुलायम कर दो।

मेरा कोरपोरल हमेशा ही यह कहता है कि मेरा थैला सूखे चमड़े के जूते की तरह सख्त है।"

"ठीक है। इसको यहॉ रख दो।" कह कर उसने उसको इशारे से अपना लोहा पीटने की जगह दिखा दी। सिपाही ने अपना थैला वहॉ रख दिया और उस लोहार ने उस थैले को हथौड़े से मारना शुरू कर दिया।

फिर वह उसे तब तक मारता रहा जब तक उस चमड़े में से बाल नहीं निकलने लगे।

कुछ देर बाद उसने पूछा — "अब ठीक है?"

सिपाही बोला — "हॉ अब ठीक है।" कह कर उसने अपना थैला अपने कन्धे पर डाला और सीधा शहर चला गया। वहॉ पहुँच कर उसने शैतान को बीच सड़क पर बाहर निकाल दिया।

लोहार के मारने से वह शैतान तो अब मुशरूम की तरह से बिल्कुल चौरस हो गया था। वह अपने पैरों पर भी बड़ी मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था। उसके साथ इतना बुरा पहले कभी नहीं हुआ था।

पर सिपाही के पास तो बहुत पैसा था उसके अपने लिये भी और उसके बच्चों के लिये भी। सो वह ज़िन्दगी भर खूब आराम से रहा।

जब वह सिपाही मर गया और वह दूसरी दुनियॉ में पहुँचा तो वह नरक में पहुँचा। उसने जा कर वहॉ का दरवाजा खटखटाया।

शैतान ने यह देखने के लिये बाहर झॉका कि वह कौन था जो उसका दरवाजा खटखटा रहा था।

उसको देखते ही वह चिल्लाया "ओह तुम, नीच तुम? तुम्हारी यहॉ कोई जरूरत नहीं है। तुम जहॉ जाना चाहो वहॉ जाओ पर तुम यहॉ अन्दर नहीं आ सकते।"

और यह कह कर अपना दरवाजा ज़ोर से बन्द कर दिया। सो वह सिपाही सीधा भगवान के पास गया और जा कर उन्हें बताया कि उसके साथ क्या हुआ था।

भगवान बोले "कोई बात नहीं तुम यहॉ ठहर सकते हो। सिपाहियों के लिये यहॉ बहुत जगह है।"

उसके बाद से शैतान ने कभी किसी सिपाही को नरक में नहीं घुसने दिया और इस तरह अब सिपाही नरक नहीं जाते।

3 ताश खेलने वाला[10]

सिपाही और मौत जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के यूनान देश की लोक कथाओं से ली है। यह भी एक बहुत ही मजेदार लोक कथा है।

एक बार एक आदमी था जो ताश खेलने का बहुत शौकीन था। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा — "एक दिन काइस्ट को दोपहर का खाना खिलाने के लिये बुलाओ।"

उसकी पत्नी ने काइस्ट को खाने का न्यौता भेजा। काइस्ट ने कहा "ठीक है मैं आऊँगा।" सो दोपहर को काइस्ट अपने सारे शिष्यों के साथ ताश खेलने वाले के घर खाना खाने आये।

जब ताश खेलने वाले की पत्नी ने इतने सारे लोग देखे तो वह बोली — "मेरे पास इतनी सारी रोटी तो नहीं है।"

काइस्ट बोले — "मेरा ख्याल है कि होगी। यह देखो मेरे पास यह रोटी है आज हम यही खायेंगे।"

खाने की मेज लगायी गयी और वे सब खाना खाने बैठे। काइस्ट ने रोटी को आशीर्वाद दिया और सबने खाना खाया। वह रोटी काफी ही नहीं बल्कि जरूरत से भी ज़्यादा थी।

[10] The Cardplayer – a folktale from Greece, Europe. Translated by Nick Nicholas. Adapted from the Web Site http://mw.lojban.org/papri/cardplayer

खाना खाने के बाद क्राइस्ट ने शराब पी और ताश खेलने वाले से पूछा कि वह क्राइस्ट से क्या चाहता था। क्राइस्ट के शिष्यों ने उसको सलाह दी कि वह उनसे स्वर्ग का राज्य माँग ले।

पर ताश खेलने वाले ने कहा — "मेरे घर में एक सेब का पेड़ है। मेरे घर बहुत सारे लोग आते हैं और उस पेड़ से वे सेब तोड़ कर ले जाते हैं। सो मैं यह चाहता हूँ कि जो कोई भी इस पेड़ से सेब तोड़े वह इससे चिपक जाये और जब तक मैं उसे न छुड़ाऊँ वह उस पेड़ से न छूटे।"

क्राइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

क्राइस्ट ने शराब का दूसरा प्याला पिया और फिर पूछा — "बोलो तुम्हारी क्या इच्छा है कि मैं तुम्हें क्या और दूँ?"

क्राइस्ट के शिष्यों ने उससे फिर कहा स्वर्ग का राज्य माँग लो पर वह फिर बोला — "नहीं, अबकी बार मैं आपसे यह माँगता हूँ कि मैं जब भी ताश खेलूँ तो बस मैं ही जीतूँ।"

क्राइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

क्राइस्ट ने शराब का तीसरा प्याला पिया और फिर पूछा — "अब तुम्हारी क्या इच्छा है कि मैं तुम्हें क्या दूँ?"

इस बार उसने कहा — "स्वर्ग का राज्य।"

क्राइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

क्राइस्ट यह कह कर वहॉ से चले गये और वह आदमी ताश खेलने चला गया। अब क्या था वह आदमी तो क्राइस्ट के वरदान से जिसके साथ भी ताश खेलता था उसी को जीत लेता था।

कुछ समय बाद क्राइस्ट को तो सूली पर चढ़ा[11] दिया गया और वह आदमी ताश खेलता रहा।

जब क्राइस्ट स्वर्ग के राज्य में पहुँचे तो उन्होंने उस ताश खेलने वाले को स्वर्ग लाने के लिये एक देवदूत[12] भेजा। वह देवदूत नीचे धरती पर आया और ताश खेलने वाले से कहा — "तुम अब काफी खेल चुके अब तुम्हारी ज़िन्दगी खत्म। चलो स्वर्ग चलो।"

ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है। मैं चलता हूँ। तब तक तुम इस सेब के पेड़ से थोड़े से सेब खाओ और बस मैं तुम्हारे साथ अभी चलता हूँ।"

वह देवदूत उस पेड़ से सेब तोड़ने गया पर जैसे ही उसने उस पेड़ को छुआ वह उससे चिपक गया। उसने ताश खेलने वाले से कहा कि वह उसको उस पेड़ से छुड़ा ले।

ताश खेलने वाले ने कहा — "ठीक है मैं तुमको छुड़ाने आता हूँ पर जब मैं चाहूँगा तभी आऊँगा उससे पहले नहीं।" और यह कह कर वह इधर उधर घूमता रहा।

[11] Translated for the word "Crucified".

[12] Translated for the word "Angel"

जब वह इधर उधर घूमते घूमते थक गया तब वह देवदूत के पास आया और बोला — "मैं अब तुमको इस पेड़ से छुड़ाता हूॅ और तुम्हारे साथ चलता हूॅ।" कह कर उसने देवदूत को उस पेड़ से छुड़ाया और उसके साथ चल दिया।

रास्ते में नरक पड़ा। वहॉ हैडेस[13] अपने **12** छोटे साथियों के साथ बैठा था तो ताश खेलने वाला उससे बोला — "मैं तुमसे ताश की एक बाजी खेलना चाहता हूॅ।

अगर मैं हार गया तो मैं तुम्हारे पास हमेशा के लिये रह जाऊॅगा और अगर तुम हार गये तो तुम मुझे अपने ये बारह छोटे साथी दे देना।"

हैडेस राजी हो गया और उसने ताश खेलना शुरू कर दिया। अब क्राइस्ट के वरदान के साथ उससे कोई जीत तो सकता नहीं था सो वह जीत गया और हैडेस से वह उसके बारह छोटे साथी ले कर चल दिया।

अब वह स्वर्ग आया। जब क्राइस्ट ने उस आदमी के साथ दूसरे लोगों को आते देखा तो उस आदमी से कहा — "मैंने तो केवल तुमको ही आने को कहा था पर तुम तो बहुत सारे लोगों को अपने साथ ले आये हो।"

[13] Hades is the Devil

वह आदमी बोला — "मैंने भी तो खाने के लिये केवल आपको ही बुलाया था और आप तेरह लोग मेरे घर आये थे। मैं भी अपने साथ बारह लोगों को ले कर आया हूँ।"

यह सुन कर क्राइस्ट ने तेरहों लोगों को स्वर्ग में आने की इजाज़त दे दी।

4 ताश खेलने वाला[14]

एक बार एक आदमी था जिसको लोग ताश खेलने वाला कहते थे और यही वह करता भी था। वह कहीं भी जाता था तो उसकी जेब में ताश रहते थे और वह हर एक को हरा देता था।

वह सड़क पर से किसी को भी पकड़ लेता था – बच्चा या कोई भी, और उससे कहता कि "आओ ताश खेलें।"

वह हमेशा पैसे के लिये ताश खेलता था। कोई बच्चा भी जो किसी दूकान पर जाता तो वह उसको बुला लेता। क्योंकि उसके पास पैसे होते थे सो वह उसके साथ खेलता और वह तुरन्त ही हार जाता।

उसका एक छोटा सा घर था और उसमें उसका एक छोटा सा रसोईघर था। वहॉ वह अपने हाथ से ही खाना बनाता था। उसके पास एक बरतन था। उस बरतन में छह–सात लोगों का खाना बन जाता था।

वह अपना चावल नापता था और उसको उस बरतन में डाल कर सुबह सुबह आग पर रख देता था। फिर वह ताश खेलता था। जब दिन के ग्यारह बजते थे और अगर वह जीत जाता था तो वह अपना सारा चावल खा लेता था।

[14] The Cardplayer – a folktale from Reunion, Southern Africa. Adapted from the book "Indian Ocean Folktales: Madagaskar, Comoros, Mauritius, Reunion, Seychelles". By Germain Elizabeth. Retold by Christian Bard

शाम को फिर वह चावल बनने के लिये रखता था और बन जाने पर खा लेता था। अगर वह अपना सुबह का चावल ग्यारह बजे खत्म नहीं कर पाता था तो वह उसको शाम के लिये रख देता था। इस तरह से उसको ताश खेलने के लिये ज़्यादा समय मिल जाता था।

एक दिन एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा — "जाओ और भगवान से मिलो और उससे कहो "भगवान तुम धरती पर आओ और इस ताश खेलने वाले को ले जाओ। यह हम सबको बहुत तंग करता है। यह सड़क पर हर जगह ताश खेलता है।

यह बच्चों और बड़ों को एक जैसा ही समझता है। अच्छा होगा अगर भगवान आयें और इसको ले जायें।"

दूसरा आदमी बोला — "ठीक है। मैं जा कर मिलता हूँ।

सो वह भगवान के पास गया और बोला — "भगवान मैं आपसे मिलने आया हूँ। हमारे यहॉ धरती पर एक आदमी है जो सबको ताश खेल कर बहुत तंग करता है। वह एक तरफ ऊपर जाता है और दूसरी तरफ नीचे जाता है। उससे सब परेशान रहते हैं। वह लोगों को काम नहीं करने देता।

कोई बच्चा बेचारा पैसे ले कर कुछ खरीदने के लिये दूकान जाता है तो वह उसको ताश खेलने के लिये बहका लेता है और फिर उसको हरा कर उसके सारे पैसे ले लेता है।"

भगवान ने पूछा — "क्या उसका नाम ताश खेलने वाला है?"

वह आदमी बोला — "जी हॉ।"

भगवान ने कहा — "वह आयेगा, वह आयेगा। मैं देखने जाता हूँ कि क्या यह सब सच है?"

सो भगवान ने एक दिन "होली घोस्ट"[15] और सेन्ट पीटर[16] से बात की और कहा "चलो इस ताश खेलने वाले को देख कर आते हैं। अगर जो कुछ यह आदमी कह रहा है सच हुआ तो हमको उसको धरती से हटाना ही पड़ेगा।"

सो वे तीनों धरती की तरफ चल दिये। जब वे उस ताश खेलने वाले के घर पहुँचे तो शाम के पॉच बज रहे थे। उन्होंने उससे पूछा — "क्या तुम्हीं ताश खेलने वाले हो?"

वह बोला — "हॉ, क्यों?"

वे बोले — हमने तुम्हारे बारे में बहुत सुना है पर अब देर हो गयी है। क्या तुम हमको रात को खाना और ठहरने की जगह दे सकते हो?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। पर तुम देख रहे हो न कि मेरा घर कितना छोटा सा है। यह मेरा खाना बनाने का बरतन है और मेरे पास बस एक डिब्बा ही चावल है। तुम लोग इधर सो सकते हो, जैसे भी चाहो और हम सब यह चावल मिल कर खायेंगे। ठीक है?"

---

[15] Holy Ghost – Christianity believes in Trinity – Father, Son and the Holy Ghost (Holy Spirit), each person itself being God.

[16] Saint Peter (Simon Peter) was one of the twelve Apostles of Jesus Christ and in popular culture is depicted holding the key of Kingdom of Heaven, sitting at the Pearly Gates to allow entry in the Kingdom of Heaven.

तीनों एक साथ बोले — "ठीक है। हमें मंजूर है।"

सो उस ताश खेलने वाले ने अपना चावल नापने वाला बरतन उठाया। उससे नाप कर चावल लिये, उनको धोया और फिर उस बर्तन को आग पर रख दिया। बाकी सब लोग बात करने लगे।

जब चावल पक गये तो उन तीनों ने पूछा — "और वह चावल? क्या वह पका हुआ चावल नहीं है?"

बर्तन में चावल पक कर उठ रहा था। सो वह ताश खेलने वाला उठ कर गया। उसने उसमें से दो प्याले चावल निकाले। अब वह बर्तन चावल से आधा भरा हुआ था।

उसने देखा और बोला — "यह चावल तो बन गया है पर अभी बहुत सारा चावल बाकी है। मैं इसको कैसे परसूँ?"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने थोड़ा सा चावल ले लिया और उसे खाने लगे। चारों का पेट भर गया।

वे तीनों उससे बहुत खुश थे। उन्होंने कहा कि वह नम्रता में, अच्छे व्यवहार में और यह देखने में कि दूसरे लोगों ने ठीक से खाया है या नहीं सबसे पहले नम्बर पर आता है।" और वे सब सोने के लिये लेट गये।

अगली सुबह जब वे उठे तो उन्होंने उस ताश खेलने वाले से पूछा कि वे उसको कितने पैसे दे दें। वह बोला — "जो थोड़ा बहुत तुम लोगों ने यहॉ खाया पिया। इसके अलावा तुम लोग इतनी छोटी

सी जगह में सोये। और मेरे ख्याल से तो ठीक से सो भी नहीं पाये होगे। उस सबका उनको पैसा देने की कोई जरूरत नहीं थी।"

वे तीनों बोले — "नहीं नहीं, हम लोगों ने पेट भर कर खाया और पूरा पूरा ठीक से सोये।"

वह ताश खेलने वाला बोला कि वह भी ठीक से सोया।

भगवान ने कहा — "अगर तुम हमसे कोई पैसा नहीं ले रहे हो तो मुझसे अपने लिये कोई मेरी कोई कृपा ही मॉग लो।"

वह बोला — "कृपा? मैं तुमसे क्या कृपा मॉगू?"

भगवान बोले — "कुछ भी। जो भी तुम्हारी इच्छा हो। मैं तुमको सन्तोष दूँगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुम वह बैन्च देख रहे हो न? तो तुम्हारी कृपा के लिये मैं तुमसे यह मॉगता हूँ कि जो कोई भी उस पर बैठे वह वहीं चिपक जाये।"

भगवान बोले — "ठीक है ऐसा ही होगा।"

होली घोस्ट बोले — "तुम मुझसे भी कुछ मॉग लो।"

"अरे तुमसे भी? मैं तुमसे क्या मॉगू? ठीक है तुम मुझको यह दो कि जब कोई मेरे दरवाजे में हो और वह दरवाजे का सहारा ले कर खड़ा हो तो वह वहॉ से फिर हिल भी न सके। वह वहीं अटक जाये।"

होली घोस्ट बोले — "ठीक है जैसा तुम चाहो। ऐसा ही होगा।"

अब सेन्ट पीटर की बारी थी। उसने कहा — "अब मेरा नम्बर है। बोलो, तुम मुझसे क्या मॉगते हो?"

ताश खेलने वाला बोला — "तो क्या तुम तीनों मेरे ऊपर कृपा करने वाले हो? ठीक है। यह तो बहुत ही अच्छा है। तुम वह सन्तरे का पेड़ देख रहे हो न? अगर कोई उस पेड़ पर मुझसे बिना पूछे चढ़े तो वह उस पर से तब तक नीचे न आ सके जब तक मैं न कहॅू।"

सेन्ट पीटर बोले — "ठीक है ऐसा ही होगा।"

इस तरह तीनों उस ताश खेलने वाले को तीन वरदान दे कर चले गये। कुछ समय बाद भगवान ने अपने मृत्यु दूत[17] को बुलाया और उसको धरती पर से ताश खेलने वाले को लाने के लिये भेजा।

मृत्यु दूत नीचे धरती पर आया और ताश खेलने वाले के घर पहुॅचा। वहॉ जा कर उसने ताश खेलने वाले से कहा कि उसको भगवान ने बुलाया है।

ताश खेलने वाले ने पूछा — "पर उसने मुझे क्यों बुलाया है?"

"यह तो मुझे नहीं मालूम नहीं पर उन्होंने मुझे तुम्हें लाने के लिये भेजा है।"

[17] Translated for the words "Death Angel"

ताश खेलने वाले ने कुछ सोचा और उससे अपने घर के सामने पड़ी बैन्च पर बैठने के लिये कहा कि वह वहॉ बैठे और वह अभी घर से तैयार हो कर आता है।

सो मृत्यु दूत बाहर उसकी बैन्च पर बैठ गया और ताश खेलने वाला घर के अन्दर तैयार होने चला गया। कुछ देर बाद वह तैयार हो कर आया और बोला — "चलो उठो मैं तैयार हूॅ।"

मृत्यु दूत ने उस बैन्च से उठने की कोशिश की पर वह तो उससे उठ ही नहीं सका। वह तो उससे चिपक गया था। उसने बहुत कोशिश की पर वह तो वहॉ से किसी तरह हिल भी नहीं पा रहा था।

उसने उससे कहा — "अरे यह क्या। मैं तो यहॉ से उठ ही नहीं पा रहा। कोई मुझे यहॉ से उठाओ।"

ताश खेलने वाला बोला — "जब तक तुम मुझसे यह वायदा नहीं करोगे कि तुम मुझे भगवान के पास नहीं ले जाओगे मैं तुमको यहॉ से नही उठाऊॅगा।"

मृत्यु दूत को उससे यह वायदा करना ही पड़ा तभी ताश खेलने वाले ने उसको वहॉ से उठाया। वहॉ से उठ कर वह सीधा भगवान के पास गया।

भगवान ने पूछा — "कहॉ है वह ताश खेलने वाला?"

मृत्यु दूत ने भगवान से जा कर सारा हाल बताया तो भगवान ने पूछा कि कि तुम वहॉ उस बैन्च के ऊपर बैठे ही क्यों थे।

वह बोला — "उसने मुझसे बैठने के लिये कहा था इसलिये मैं वहॉ बैठ गया था। मुझे क्या पता था कि उस पर बैठ कर मैं वहॉ चिपक जाऊॅगा। और उसके बाद जब मैं वहॉ पर चिपक गया तो मैं तो उठ ही नहीं सका।

जब मैंने उससे यह वायदा किया कि मैं उसको अपने साथ नहीं ले जाऊॅगा तब कहीं जा कर उसने मुझे उस बैन्च से आजाद किया।"

"ठीक है अब तुम फिर से जाओ और उस ताश खेलने वाले को यहॉ ले कर आओ। मैं और कुछ नहीं जानता। मैं तुमको हुक्म देता हूॅ और तुम मेरे हुक्म का पालन करो।"

सो वह फिर ताश खेलने वाले के पास गया तो ताश खेलने वाला उसको फिर से आया देख कर बोला — "अरे तुम यहॉ फिर से?"

"हॉ भगवान ने मुझसे कहा है कि अबकी बार मैं तुमको ले कर आऊॅ। और इस बार कोई सौदा नहीं।"

ताश खेलने वाले ने मुॅह बना कर कहा — "हुॅह, कोई सौदा नहीं।"

मृत्यु दूत बोला — "अबकी बार तुमको मेरे साथ चलना ही पड़ेगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊॅगा।"

"क्या तुम मेरे साथ नहीं जा रहे हो? यह नहीं हो सकता। तुमको चलना ही पड़ेगा। उन्होंने मुझसे तुमको साथ लाने के लिये कहा है। कल तुमने मुझे उस छोटी सी बैन्च पर पकड़ लिया था। मैंने भगवान को सब बता दिया तो उन्होंने मुझे फिर से यहॉ भेज दिया।"

"ठीक है तुम यहॉ बैठो।"

"क्या? उस बैन्च पर?"

"हॉ हॉ। ठीक है। तुम बैन्च पर नहीं बैठना चाहते तो घर के बाहर मेरे दरवाजे पर खड़े हो कर मेरा इन्तजार करो मैं अभी आया।"

मृत्यु दूत उसके दरवाजे के सहारे खड़ा हो गया। जैसे ही वह वहॉ खड़ा हुआ तो वह तो वहॉ दरवाजे से चिपक गया।

ताश खेलने वाला बोला — "यह दरवाजा तुमको पकड़ कर रखेगा तब तक मैं ज़रा ताश खेल कर आया।"

मृत्यु दूत बोला — "ताश खेलने से क्या मतलब है तुम्हारा? मैंने कहा न कि कोई सौदा नहीं बस तुमको चलना है।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं तुम्हारे साथ नहीं जा रहा। तुम यहीं ठहरो।"

यह सुन कर मृत्यु दूत तो पागल सा हो गया। उसने अपने आपको वहॉ से छुड़ाने की बहुत कोशिश की "कोई सौदा नहीं ओ

ताश खेलने वाले। मुझे जाने दो। मैं जा कर भगवान को बता दूँगा तो वह मुझे फिर से तुमको लाने के लिये यहॉ भेज देंगे।"

ताश खेलने वाले ने दरवाजे से कहा — "देखो यह यहॉ खड़ा है इसको जाने मत देना।"

फिर वह मृत्यु दूत से बोला — "अगर तुम मुझे ले कर जाना चाहते हो तो मैं तुमको यहॉ से नहीं जाने दूँगा।"

मृत्यु दूत ने फिर कहा — "अच्छा तो मुझे तो जाने दो। मैं भगवान से जा कर कहूँगा कि मेरे साथ क्या हुआ था। और मैं तुमको भी नहीं ले जाऊँगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर मैं तुमको छोड़ दूँगा तो तुम मुझे ले जाओगे। मुझे मालूम है।"

मृत्यु दूत फिर बोला — "नहीं मैं वायदा करता हूँ कि मैं तुमको नहीं ले जाऊँगा। लेकिन अब तो मुझे जाने दो।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर तुम मुझे नहीं ले जाओगे तो मैं तुमको छोड़ देता हूँ। जाओ यहॉ से चले जाओ। अब तुम दरवाजे से चले जाओ।"

मृत्यु दूत ने दरवाजा छोड़ दिया और वह वहॉ से चला गया। वह वहॉ से भगवान के पास पहुँचा तो भगवान ने पूछा — "अरे यह क्या तुम फिर बिना ताश खेलने वाले के आ गये?"

"मैं बताता हूँ कि मेरे साथ क्या हुआ।"

"मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि तुम वहॉ गये होगे और जा कर उसकी बैन्च पर बैठ गये होगे।"

"नहीं इस बार उसके दरवाजे ने मुझे पकड़ लिया। मैं उसके दरवाजे में फॅस गया।"

भगवान ने पूछा — "क्या मैंने तुमको उसके दरवाजे में फॅसने के लिये भेजा था। मैने तुमको ताश खेलने वाले को लाने के लिये भेजा था। फिर जाओ और ताश खेलने वाले को ले कर आओ। अबकी बार कोई सौदा नहीं। बस उसको ले कर आओ। उसको धरती पर से उठा कर लाना है। समझे।"

मृत्यु दूत बोला — "मैं क्या करता मैं उसके दरवाजे में फॅस गया था। मैंने उससे छूटने की बहुत कोशिश की पर मैं छूट ही नहीं सका सो मुझे उससे वायदा करना पड़ा कि मैं उसको नहीं ले जाऊॅगा ताकि कम से कम मैं उसके दरवाजे से तो छूट सकूॅ।"

भगवान बोले — "ठीक है अब भागो यहॉ से। यह आखिरी बार है। उसको ले कर आओ। अबकी बार ख्याल रखना।"

सो वह फिर धरती पर गया और फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुॅच कर उसको आवाज लगायी। ताश खेलने वाला बोला — "अरे मृत्यु दूत तुम फिर से यहॉ? अब तुम्हें क्या चाहिये?"

"भगवान ने मुझे यहॉ तुमको ले आने के लिये भेजा है। अबकी बार तुमको चलना ही है।"

"नहीं, मैं नहीं जा रहा।"

"नहीं का क्या मतलब है तुमको चलना ही है।"

"अच्छा तो तुम उस छोटी सी बैन्च पर बैठो... ।"

"क्या? उस बैन्च पर?"

"अच्छा तो दरवाजे के पास खड़े हो जाओ।"

"क्या, और फिर वहॉ से हिल भी न सको। तुम मेरे साथ अभी चलो।"

सो वह बाहर ही खड़ा रहा। न तो वह बैन्च पर बैठा और न ही वह दरवाजे के पास खड़ा हुआ। वहीं पास में सन्तरे का पेड़ था और उस पर पके सन्तरे लगे हुए थे।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर हम वाकई भगवान के पास जा रहे हैं तो पहले मुझे यह बताओ कि मुझे क्या करना होगा। ऐसा करो, देखो इस पके सन्तरे के पेड़ को देखो।

जब तक मैं तैयार होता हूॅ तुम इस पेड़ पर चढ़ जाओ और वहॉ से कुछ सन्तरे ही तोड़ लो। चार सन्तरे तोड़ लेना – दो अपने लिये और दो भगवान के लिये।"

सो मृत्यु दूत उस पेड़ पर चढ़ गया। जब वह ऊपर तक पहुॅच गया तो ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है अब मैं ताश खेलने जा रहा हूॅ।"

"क्या? मैं नीचे उतर रहा हूॅ फिर साथ साथ चलते हैं।"

"नहीं तुम नीचे नहीं उतर रहे।"

"क्या? मैं नीचे नहीं उतर रहा?"

"हॉ, तुम नीचे नहीं उतर रहे। तुम यहीं मेरा इन्तजार करो मैं अभी ताश खेलने जा रहा हूॅ। जब मैं तय कर लूॅगा कि मुझे क्या करना है तब मैं तुम्हें बताऊॅगा तब हम चलेंगे। और तभी मैं तुम्हें यहॉ से आजाद करूॅगा।"

मृत्यु दूत बोला — "ओ ताश खेलने वाले मैं तुमसे कह रहा हूॅ कि मुझे जाने दो। पहले तुमने मुझे इस छोटी सी बैन्च पर पकड़ा, फिर तुमने मुझे दरवाजे में पकड़ा और अब तुमने मुझे इस सन्तरे के पेड़ पर पकड़ रखा है।

यह सब तो ठीक है, पर यह तो बताओ तुम्हें चाहिये क्या? भगवान ने मुझसे कहा है कि तुम यहॉ लोगों को परेशान करते हो सो मैं तुमको यहॉ से ले जाऊॅ।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं किसी को परेशान नहीं करता। मैं भगवान को भी परेशान नहीं करता। मैं किसी को परेशान नहीं करता सिवाय अपने साथ ताश खेलने वालों के।"

"ठीक है, तो मुझे तो जाने दो। मैं तुमको बता रहा हूॅ कि मैं जा रहा हूॅ।"

ताश खेलने वाला बोला — "नहीं, तुम मुझे साथ ले कर नहीं जा सकते। मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊॅगा। तुम मुझे ले जाओगे इसी लिये तो मैं तुम्हें यहॉ से जाने नहीं दे सकता।"

पर बाद में मत्यु दूत को ताश खेलने वाले से एक वायदा करना पड़ा कि अगर उसने उसको छोड़ दिया तो वह उसको ले कर नहीं

जायेगा और भगवान के पास जा कर उनको यह बतायेगा कि वह धरती पर कैसे पकड़ा गया था।

ताश खेलने वाला राजी हो गया तो उसने उसको सन्तरे के पेड़ पर से नीचे बुला लिया। मृत्यु दूत वहॉ से किसी तरह नीचे उतर कर सन्तरे ले कर भगवान के पास चला गया।

जब वह भगवान के पास पहुँचा तो भगवान ने उससे पूछा — "कहॉ है वह ताश खेलने वाला?"

मृत्यु दूत बोला — "भगवन, इस बार उसने मुझे अपने सन्तरे के पेड़ में पकड़ लिया और फिर मुझे वह पेड़ छोड़ ही नहीं रहा था। फिर भी उसने आपके लिये दो सन्तरे भेजे हैं और कहा है कि मैं इनको आपको दे दूँ।"

भगवान बोले — "मुझे किसी सन्तरे की जरूरत नहीं है। और मैंने तुमको वहॉ सन्तरे तोड़ने के लिये भी नहीं भेजा था। क्या मैंने तुमसे यह कहा था कि तुम उसके सन्तरे के पेड़ पर चढ़ो? मुझको तो बस वह ताश खेलने वाला चाहिये और कुछ नहीं।"

सो वह अबकी बार चौथी बार धरती पर गया। इस बार उसको बहुत सावधान रहना था। भगवान ने भी उससे सावधान रहने के लिये कहा और कहा कि अगर वह सावधान नहीं रहा तो वह उसको वहॉ ले कर नहीं आ पायेगा।

सो वह फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुँचा और जा कर उसको आवाज लगायी।

ताश खेलने वाला बाहर निकल कर आया और बोला — "अरे मृत्यु दूत तुम फिर से? तुम यहॉ फिर से वापस क्यों आ गये?"

मृत्यु दूत बोला — "आज तो तुमको जाना ही पड़ेगा। भगवान ने मुझसे कहा है कि आज मैं तुमको ले कर ही आऊॅ। इस बार कोई सौदा नही – न कोई बैंच और न कोई दरवाजा और न ही कोई सन्तरे का पेड़। बस तुमको मेरे साथ चलना है।"

ताश खेलने वाले ने कहा — "ठीक है, अगर मुझको जाना ही है तो मुझे पहले अपने ताश के पत्ते ले आने दो।"

सो वह अन्दर गया और अपना ताश निकल कर ले लाया। उनको उसने अपनी जेब में रख लिये। फिर उसने एक थैला उठाया उसको अपने कन्धे पर डाला और वह इस तरह उस मृत्यु दूत के पीछे पीछे चल दिया।[18]

चलते चलते रास्ते में कुछ दूरी पर ताश खेलने वाले को ग्रैन इ्याब[19] दिखायी दे गया तो वह बोला — "ज़रा रुको ओ मृत्यु दूत, मैं चलते चलते इसके साथ एक ताश की एक बाजी[20] खेल लॅू।"

मृत्यु दूत बोला — "मुझे बहुत देर हो जायेगी।"

[18] The final episode in Germain Elizabeth's "Cardplayer' tale exemplifies cultural creolization. European tradition contributes Cardplayer's expulsion from Heaven. African tradition puts a familiar frame around it. Hell is forgotten in favor of two-sided conflict between the "little man" and the God. Elizabeth says "Cardplayer" earns the way to Heaven

[19] Gran Dyab – Satan/Devil

[20] Translated for the word "Deal"

ताश खेलने वाला गिड़गिड़ा कर बोला — "बस एक मिनट, केवल एक बाजी।"

कह कर वह ग्रेन इ्याब के पास पहुॅच गया और उससे बोला — "आजा एक बाजी खेलते हैं।"

ग्रैन इ्याब बोला "क्या?"

ताश खेलने वाला बोला — "आओ ग्रैन इ्याब, एक बाजी खेलते हैं। अगर तुम जीत जाओ तो तुम मुझे खा लेना।"

उसने सोचा "देखो वह मृत्यु दूत खड़ा है। या तो मैं उसके साथ चला जाऊॅगा या फिर ग्रैन इ्याब के मुॅह में चला जाऊॅगा। क्या फर्क पड़ता है।"

वह फिर ग्रैन इ्याब से बोला — "सो अगर तुम जीत गये तो तुम मुझे खा लेना और अगर मैं जीत गया तो तुम मुझे अपने ये **12** छोटे शैतान दे देना।"

ग्रैन इ्याब बोला — "यकीनन। पर ओ ताश खेलने वाले, क्या तुम समझते हो कि तुम मेरे साथ ताश का खेल सकते हो?"

फिर भी दोनों ताश खेलने बैठे तो ताश खेलने वाले ने ग्रैन इ्याब को हरा दिया। अपने समझौते के अनुसार ग्रैन इ्याब गया और **12** छोटे शैतान ला कर उसको दे दिये।

उसने उन शैतानों को ले कर अपने थैले में डाला, थैले को अपने कन्धे पर डाला और मृत्यु दूत से बोला — "देखा तुमने? मैं कोई ऐसे ही झक नहीं मार रहा था। चलो चलते हैं।"

वे लोग स्वर्ग के दरवाजे पर आ पहुँचे थे। दरवाजे पर सेन्ट पीटर खड़ा हुआ था। मृत्यु दूत सेन्ट पीटर से बोला — "मैं इस ताश खेलने वाले को पकड़ लाया हूँ।"

सेन्ट पीटर ने पूछा — तुम ताश खेलने वाले को ले आये?"

"हॉ यह रहा।"

"बहुत अच्छे, उसको अन्दर ले आओ।" सो ताश खेलने वाला अन्दर गया।

सेन्ट पीटर ने पूछा — "यह तुम्हारे कन्धे पर क्या है?"

मृत्यु दूत बोला — "यह इसकी जीत है। जब यह यहॉ आ रहा था तो इसको इसने ताश की एक बाजी खेल कर जीता था।"

सेन्ट पीटर बोले — "क्या इसने कुछ जीत लिया?"

मृत्यु दूत बोला — "हॉ, यह गैन इयाब के साथ खेला और उससे इसने बारह छोटे शैतान जीत लिये।"

सेन्ट पीटर ने फिर कहा — "यहॉ कोई शैतान नहीं आ सकता।"

"वह तो ठीक है। पर मैंने इनको जीता है। अब मैं इनका क्या करूँ? ये मेरे हैं। तुम मुझे इनको रखने के लिये कहीं किसी कोने में कोई जगह दे दो।"

सेन्ट पीटर बोले — "मैंने तुमसे कहा न कि यहॉ अन्दर कोई शैतान नहीं आ सकता। तुम इनको बाहर छोड़ सकते हो।"

ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है। तब मैं इनको यहॉ दरवाजे के पास ही छोड़ देता हूँ।" और उसने अपना थैला दरवाजे के पास ही रख दिया।

वह वहीं बैठ गया और सेन्ट पीटर को घूरने लगा। कुछ पल उसको देखने के बाद वह बोला — "क्या वह तुम्हीं नहीं थे जो कुछ समय पहले मुझसे रात के लिये खाना और ठहरने की जगह मॉगने आये थे? तुम लोग तीन थे।"

सेन्ट पीटर बोले — "हॉ, उनमें एक मैं भी था।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुम तीनों भी एक चीज़ थे। तुम तीनों मेरे घर आये। मैं तुम लोगों को अन्दर ले गया। मैंने चावल बनाये। तुम लोगों को खाने के लिये दिये। तुम लोगों को सोने के लिये जगह दी।

और अब जब मैं यहॉ आया हूँ तो मैं अन्दर नहीं आ सकता क्योंकि मेरे पास कुछ छोटे शैतान हैं? तुम तो वाकई अजीब चीज़ हो।"

उसने अपने शैतानों का थैला उठाया और वहॉ से चला गया क्योंकि सेन्ट पीटर उसको उन शैतानों के साथ अन्दर नहीं आने दे रहा था।

5 बोतल में बन्द मौत

सिपाही और मौत जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश के सिसिली टापू पर कही सुनी जाती है।

एक बार एक बहुत ही अमीर और दयालु सराय वाला था जिसने अपनी सराय के आगे एक साइन बोर्ड लगा रखा था। उस साइन बोर्ड के ऊपर लिखा था "मेरी सराय में आने वाले को खाना मुफ्त"।

सो सारा दिन लोग उसकी सराय में आते रहते थे और वह सब को मुफ्त खाना खिलाता रहता था।

एक बार जीसस और उनके **12** अपोसिल्स भी उस शहर में आये। उन्होंने भी वह साइन बोर्ड पढ़ा तो सेन्ट थोमस[21] बोला — "मालिक, जब तक मैं अपनी ऑखों से देख न लूॅ और अपने हाथों से छू कर महसूस न कर लूॅ तब तक मैं किसी चीज़ पर विश्वास नहीं करता। सो चलिये अन्दर चलते हैं।"

सो जीसस और सब अपोसिल्स उस सराय के अन्दर गये। उन्होंने सबने वहॉ खूब खाया और खूब पिया। सराय के मालिक ने भी उनका शाही स्वागत किया।

[21] St Thomas was one of the four disciples of Jesus who has written one of the four Books of the New Testament Bible. See the list of Jesus' disciples at the end of this book.

वहॉ से चलने से पहले सेन्ट थोमस बोला — "ओ भले आदमी, तुम मालिक से कोई चीज़ क्यों नहीं मॉग लेते?"

उस सराय वाले ने जीसस से कहा — "मालिक, मेरे घर में एक अंजीर का पेड़ है पर मैं उस पेड़ की एक भी अंजीर नहीं खा पाता।

जैसे ही वे पकती हैं बच्चे आ जाते हैं और वे सारी अंजीरें खा जाते हैं। अब मैं यह चाहता हूॅ कि आप ऐसा कुछ कर दें कि जो भी उस पेड़ पर चढ़े वह मेरी इजाज़त के बिना नीचे न आ सके।"

जीसस ने कहा — "ऐसा ही होगा।" और उस पेड़ को उन्होंने वैसा ही आशीर्वाद दे दिया।

अगली सुबह पहले चोर का उस पेड़ से हाथ चिपक गया, दूसरे का पैर चिपक गया और तीसरे का तो सिर ही दो डालियों के बीच फॅस गया और वह उसे उनमें से निकाल ही नहीं सका।

जब सराय वाले ने उनको इस तरह पेड़ से चिपके देखा तो उनको सबको नीचे उतारा और उनकी अच्छी पिटायी कर के उनको छोड़ दिया।

कुछ ही दिनों में सबको पेड़ के इस गुण के बारे में पता चल गया कि जो कोई पेड़ को छुएगा वह उससे चिपक जायेगा। तो छोटे बच्चे तो उस पेड़ के पास आते ही नहीं थे बड़े भी उस पेड़ से दूर रहने लगे।

अब सराय वाला आराम से रह सकता था और अपने पेड़ की अंजीरें खा सकता था।

इस तरह सालों गुजर गये। वह पेड़ बूढ़ा हो गया। अब उस पर फल नहीं आते थे। सराय वाले ने एक लकड़ी काटने वाले को उस पेड़ को गिराने के लिये बुलाया।

उसने पेड़ गिरा दिया तो सराय वाले ने उससे पूछा — "क्या तुम मेरे लिये इस पेड़ की लकड़ी की एक बोतल बना सकते हो जो इतनी बड़ी हो कि उसमें एक आदमी घुस जाये?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं।" और लकड़ी काटने वाले ने उसके लिये उस पेड़ की लकड़ी की उतनी बड़ी एक बोतल बना दी।

उस बोतल में उस पेड़ की लकड़ी के जादुई गुण आ गये थे – वह यह कि जो कोई भी उस बोतल में घुसता तो वह बिना सराय वाले की इजाज़त के बाहर ही नहीं आ सकता था।

अब वह सराय वाला भी बूढ़ा हो चला था। एक दिन मौत उसको लेने के लिये आया तो वह आदमी बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। चलो चलते हैं। पर तुम्हारे साथ जाने से पहले क्या तुम मेरा एक काम करोगे?

मेरे पास एक बोतल है जिसमें शराब भरी हुई है। पर उसमें एक मक्खी पड़ गयी है। अब उस शराब को मैं पी ही नहीं सकता। क्या तुम उसमें कूद कर उस मक्खी को निकाल दोगे ताकि मैं मरने से पहले उस बोतल में से कम से कम एक घूँट शराब तो पी चलूँ।"

"अरे तुम मुझसे बस इतना सा काम करवाना चाह रहे हो? यह तो कुछ भी नहीं मैं अभी करता हूँ।"

कह कर मौत उस बोतल में कूद पड़ा। उसके बोतल में कूदते ही सराय वाले ने उस बोतल के मुँह पर डाट[22] लगा दी।

फिर वह मौत से बोला — "बस अब तुम मेरे पास रहोगे और तुम कभी भी इसमें से निकल नहीं पाओगे।"

मौत तो अब सराय वाले के पंजे में फँस चुका था सो दुनियॉ में अब किसी को मौत ही नहीं आ रही थी। सब ज़िन्दा थे। अब सब जगह पैरों तक लम्बी सफेद दाढ़ी वाले लोग दिखायी पड़ते थे।

यह बात अपोसिल्स ने भी देखी और जीसस को इसका इशारा किया। जीसस ने आखिर उस सराय वाले के पास जा कर बात करने का इरादा किया।

वह उस सराय वाले के पास गये और उससे कहा — "भाई, क्या तुम सोचते हो कि यह ठीक है कि तुमने मौत को इस तरह से सालों से बन्द कर रखा है?

ज़रा उन लोगों के बारे में सोचो जो बूढ़े होने की वजह से कमजोर हो गये हैं या जो अपनी ज़िन्दगी को घसीट रहे हैं और बिना मौत के ठीक नहीं हो सकते कि उन बेचारे लोगों का क्या होगा?"

[22] Translated for the word "Cork"

सराय वाले ने जवाब दिया — "मालिक, क्या आप यह चाहते हैं कि मैं मौत को बाहर निकाल दूँ? तब आप मुझसे वायदा कीजिये कि मरने के बाद आप मुझे स्वर्ग भेज देंगे तभी मैं मौत को इस बोतल में से बाहर निकालूँगा।"

जीसस ने सोचा अब मैं क्या करूँ? अगर मैं उसको इस बात के लिये मना कर दूँ तब तो मैं बहुत बड़ी मुसीबत में फॅस जाऊँगा क्योंकि मौत इस बोतल में ही बन्द रह कर किसी को भी नहीं आ पायेगी और यह ठीक नहीं है इसलिये जीसस ने कहा — "जैसा तुम चाहते हो ऐसा ही होगा।"

जीसस से यह वायदा ले कर सराय वाले ने वह बोतल खोल दी और मौत को आजाद कर दिया।

इसके बाद सराय वाले को कुछ और साल ज़िन्दा रहने दिया गया। बाद में मौत फिर वापस आयी और उसको स्वर्ग ले गयी। इस तरह सराय वाला मौत को बोतल में बन्द कर के स्वर्ग चला गया।

6 आजा मेरे थैले में कूद जा[23]

सिपाही और मौत जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

इस बात को बहुत साल हो गये जब निओलो[24] के बंजर पहाड़ों में एक पिता अपने बारह बेटों के साथ रहता था।

एक बार वहॉ अकाल पड़ा तो पिता ने बेटों से कहा — "बच्चों, मैं अब तुम्हें रोटी नहीं खिला सकता। तुम लोग अब बाहर जाओ जहॉ मुझे पूरा विश्वास है कि तुम बजाय घर के वहॉ ज़्यादा खुश रहोगे।"

यह सुन कर उसके ग्यारह बड़े बेटे तो घर छोड़ कर जाने के लिये तैयार हो गये पर उसका बारहवॉ बेटा जो सबसे छोटा था और लॅगड़ा था रोने लगा। वह बोला — "मुझ जैसा अपंग आदमी बाहर की दुनियॉ में निकल कर क्या कमायेगा पिता जी।"

पिता बोला — "बेटा, रो नहीं। तुम भी अपने भाइयों के साथ जाओ और जो ये लोग कमायेंगे उसी में से ये तुमको भी देंगे।"

सो उसके बारहों बेटों ने आपस में एक दूसरे से वायदा किया कि वे एक साथ रहेंगे और वे वहॉ से चले गये।

---

[23] Jump into My Sack – a folktale from Italy from its Corsica area.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[24] Niolo – name of a place in Italy

वे सारा दिन चलते रहे। फिर दूसरे दिन भी चलते रहे। पर छोटा वाला हमेशा ही अपने लॅगड़ेपन की वजह से उनसे सबसे पीछे रह जाता था।

तीसरे दिन सबसे बड़े भाई ने कहा — "हमारा यह सबसे छोटा भाई फ्रान्सिस[25] हमेशा ही पीछे रह जाता है। यह अब हमारे लिये एक परेशानी है।

हम लोग आगे आगे चल कर इसको यहीं पीछे सड़क पर छोड़ देते हैं। यह इसके लिये भी अच्छा रहेगा क्योंकि हो सकता है कि कभी कहीं से इसको कोई दयालु मिल जाये और इस पर दया कर के इसको अपने साथ ले जाये।"

यह सोच कर वे सब अपने छोटे भाई का इन्तजार किये बिना ही आगे चल दिये। वे बोनीफ़ेसियो[26] पहुॅचने तक रास्ते में जो भी मिला उसी से भीख मॉगते चले गये।

बोनीफ़ेसियो पहुॅच कर उनको एक नाव बन्दरगाह पर लगी हुई दिखायी दे गयी। नाव देख कर सबसे बड़ा भाई बोला — "क्या हो अगर हम इस नाव पर चढ़ जायें और सारडीनिया[27] चले जायें। हो सकता है कि वहॉ हमारे शहर से कम ज़ोर का अकाल हो।"

सो वे सब भाई उस नाव में चढ़े और उन्होंने नाव खे दी। जब वे खाड़ी के बीच में पहुॅचे तो वहॉ एक भयानक तूफान आ गया।

---

[25] Francis – name of the 12th and the youngest brother

[26] Bonifacio – name of a plce in Italy

[27] Sardinia – name of a place in Italy

उस तूफान में नाव के टुकड़े टुकड़े हो गये और ग्यारहों भाई समुद्र में डूब गये।

इस बीच छोटा अपंग फ्रान्सिस चलते चलते बहुत थक गया। और जब उसने अपने भाइयों को अपने आस पास नहीं देखा तो वह चिल्लाने लगा, रोने लगा और पागल सा हो गया।

लेकिन वह क्या करता वह वहीं सड़क के किनारे ही बैठ गया। वह चलते चलते थक गया था सो बैठते ही सो गया।

उस जगह की परी वहीं एक पेड़ पर बैठी थी। वह सब कुछ देख रही थी। जैसे ही फ्रान्सिस सो गया वह पेड़ से नीचे उतरी। उसने कुछ खास तरह के पत्ते इकट्ठे किये, उनकी पुल्टिस बनायी और फ्रान्सिस की लॅगड़ी टॉग पर लगा दिया। उसकी टॉग तुरन्त ही ठीक हो गयी।

फिर उसने एक गरीब बुढ़िया का रूप रख लिया और एक आग जलाने वाली लकड़ी के गट्ठर पर बैठ गयी। वहॉ बैठ कर वह उसके जागने का इन्तजार करने लगी।

कुछ देर बाद फ्रान्सिस जागा तो लॅगड़ाते हुए उठा पर उसने देखा कि वह तो अब लॅगड़ा नहीं था वह तो अब और दूसरों की तरह से ठीक से चल सकता था। तभी उसकी निगाह लकड़ी के गट्ठर पर बैठी एक बुढ़िया पर पड़ी।

उसने उससे पूछा — "मैम, क्या आपने यहॉ आस पास में किसी डाक्टर को देखा?"

"डाक्टर, तुम्हें डाक्टर क्यों चाहिये?"

"मैं उसको धन्यवाद देना चाहता हूॅ। क्योंकि जब मैं सो रहा था तो जरूर ही यहॉ कोई बड़ा डाक्टर आया होगा जिसने मेरी लॅगड़ी टॉग ठीक कर दी।"

यह सुन कर वह बुढ़िया बोली — "वह मैं थी जिसने तुम्हारी टॉग ठीक की। क्योंकि मैं ऐसे बहुत सारे पत्तों के बारे में जानती हूॅ जिनसे लॅगड़ी टॉग भी ठीक की जा सकती है।"

यह सुन कर फ्रान्सिस बहुत खुश हो गया और उसने बुढ़िया के गले में अपनी बॉहें डाल दीं और उसके दोनों गाल चूम लिये।

"मैं आपको किस तरह से धन्यवाद दूॅ मैम? मैं आपका यह लकड़ी का गट्ठर ले चलता हूॅ।"

कह कर वह उस लकड़ी के गट्ठर को उठाने के लिये नीचे झुका पर जब वह ऊपर उठा तो उसने देखा कि वहॉ पर तो कोई बुढ़िया नहीं थी बल्कि वहॉ तो एक बहुत ही सुन्दर लड़की खड़ी थी। उसने हीरे जवाहरात पहने हुए थे और उसके सफेद बाल उसके कन्धे पर से कमर तक आ रहे थे।

उसने गहरे नीले रंग की सुनहरे तारों से कढ़ाई की गयी पोशाक पहन रखी थी। उसके जूतों पर टखने की जगहों पर दो चमकीले कीमती पत्थर लगे हुए थे। फ्रान्सिस तो कुछ बोल ही नहीं सका और उस परी के पैरों पर पड़ गया।

परी बोली — "उठो फ्रान्सिस उठो। मुझे मालूम है कि तुम मुझे धन्यवाद देना चाहते हो। मैं तुम्हारी सहायता करूँगी। तुम कोई सी दो इच्छाऐं मुझे बताओ मैं उनको तुरन्त ही पूरा क़र दूँगी। ध्यान रखना कि मैं केनो झील की परियों की रानी[28] हूँ।

लड़के ने कुछ सोचा फिर बोला — "मुझे एक ऐसा थैला चाहिये जिसको जब भी मैं जिसके लिये भी कहूँ कि तू उसे खींच ले तो वह उसे खींच ले।"

"तुमको ऐसा थैला मिल जायेगा। अब तुम अपनी दूसरी इच्छा बताओ।"

लड़का बोला — "मुझे एक ऐसी डंडी चाहिये जो वही करे जो मैं उससे करने के लिये कहूँ।"

"तुमको ऐसी डंडी भी मिल जायेगी।" कह कर वह परी गायब हो गयी और फ्रान्सिस के पैरों के पास एक थैला और एक डंडी पड़े हुए थे।

खुश होते हुए फ्रान्सिस ने उन दोनों चीज़ों को जॉचना चाहा। उसको इस समय भूख लगी थी सो वह बोला "एक भुना हुआ तीतर[29] मेरे थैले में"। उसके यह कहते के साथ ही एक पूरा भुना हुआ तीतर उसके थैले में आ पड़ा।

[28] Queen of the Fairies of Lake Creno

[29] Translated for the word "Partridge". See its picture above.

"रोटी भी।" और एक डबल रोटी आ कर थैले में गिर पड़ी। और "एक बोतल शराब भी।" और एक बोतल शराब भी उसके थैले में आ गयी। इस तरह फ्रान्सिस ने बहुत दिनों बाद पेट भर कर स्वादिष्ट खाना खाया।

अगले दिन वह मरियाना[30] आ गया जहॉ कोरसिका[31] और कौन्टीनैन्ट के बहुत मशहूर जुआ खेलने वाले मिलने के लिये आये हुए थे।

अब फ्रान्सिस के पास तो कोई पैसा था नहीं सो उसने कहा "सौ हजार क्राउन मेरे थैले में आ जाओ।" और उसका थैला सौ हजार क्राउन के सिक्कों से भर गया।

यह खबर तो सारे मरियाना में जंगली आग की तरह फैल गयी कि मरियाना में सैन्टो फ्रान्सैस्को[32] से एक बहुत ही अमीर राजकुमार आया है। उसके पास एक ऐसा थैला है जो पैसों से कभी खाली नहीं होता।

उस समय शैतान खास कर के मरियाना की तरफ था। उसने एक बहुत सुन्दर नौजवान का रूप रखा हुआ था और वह ताश के खेल में सबको हरा रहा था और जब वे हार जाते थे और उनका पैसा खत्म हो जाता था तो वह उनकी आत्मा खरीद लेता था।

[30] Mariana – name of a place in Italy

[31] Corsica – name of a place in Italy

[32] Santo Francesco – name of a place and the name of Francisco too, Francis got famous in Mariana town.

इस अमीर परदेसी के बारे में सुन कर जो वहॉ के लोगों में सैन्टो फ्रान्सैस्को के नाम से मशहूर हो गया था वह शैतान इसके पास भी आया और बोला — "ओ भले राजकुमार, मुझे अपनी बहादुरी के लिये माफ करना पर जुआ खेलने वाले की हैसियत से तुम इतने मशहूर हो चुके हो कि मैं तुम्हारे साथ जुआ खेलने से अपने आपको रोक नहीं सका।"

फ्रान्सिस बोला — "तुम मुझे शर्मिन्दा कर रहे हो। सच तो यह है कि मैं तो ताश का कोई खेल खेलना जानता ही नहीं। मैंने तो कभी ताश के पत्ते भी अपने हाथ में नहीं पकड़े। फिर भी मुझे तुम्हारे साथ ताश खेल कर बड़ी खुशी होगी।

मैं केवल तुमसे खेल सीखने के लिये खेलूॅगा। और मुझे यकीन है कि तुम जैसे गुरू के साथ खेल सीख कर मैं खेल में मास्टर हो जाऊॅगा।"

शैतान को लगा कि उसका उस राजकुमार से मिलना सफल हो गया सो जब वह वहॉ से चला तो वह उसको विदा कहने के लिये नीचे झुका तो जानबूझ कर उसने अपनी टॉग आगे बढ़ा कर अपना आधा खुर[33] उस राजकुमार को दिखा दिया।

"ओह मेरे भगवान।" फ्रान्सिस ने अपने आपसे कहा — "तो यह तो शैतान खुद था जिसने मेरे पास आ कर मुझे इज़्ज़त दी। अच्छा है, अब वह अपने बराबर वाले से मिलेगा।"

[33] Translated for the word "Cloven Hoof". It seems that it is the mark of a Satan in Italy.

जब वह अकेला रह गया तो उसने थैले से बढ़िया खाना लाने के लिये कहा।

अगले दिन वह कसीनो[34] पहुॅचा तो देखा कि एक जगह पर बहुत सारे लोग बैठे हुए हैं। फ्रान्सिस उनके बीच से उनको धक्का देता हुआ उस भीड़ के अन्दर घुस गया। वहॉ जा कर उसने क्या देखा कि एक नौजवान नीचे पड़ा हुआ है और उसकी छाती से खून बह रहा है।

एक आदमी बोला — "यह आदमी जुआरी था। इसने बेचारे ने जुए में अपना सारा पैसा खो दिया और फिर एक मिनट पहले ही इसने अपने सीने में छुरा भौंक लिया।"

वहॉ बैठे सारे जुआरियों के चेहरे उतरे हुए थे पर फ्रान्सिस ने देखा कि उन सब दुखी लोगों के बीच में एक आदमी मुस्कुरा रहा था। वह आदमी वह शैतान था जो फ्रान्सिस से मिलने आया था।

शैतान बोला — "जल्दी करो। इस बदकिस्मत आदमी को यहॉ से बाहर निकालो और खेल चालू रखो।"

कुछ लोग उस आदमी के शरीर को वहॉ से उठा कर बाहर ले गये और दूसरे लोगों ने खेलने के लिये फिर से ताश के पत्ते उठा लिये।

फ्रान्सिस जिसको ताश के पत्ते हाथ में पकड़ने तक नहीं आते थे उस दिन अपना सब कुछ हार गया। दूसरे दिन उसको खेल का कुछ

[34] Casino where people go for gambling

पता चला पर फिर भी वह पहले दिन से ज़्यादा हार गया। पर तीसरे दिन वह खेल का मास्टर हो गया पर उस दिन तो वह इतना ज़्यादा हारा कि लोगों को लगा कि आज तो वह बर्बाद ही हो गया।

पर कोई भी नुकसान उसके लिये ज़्यादा नहीं था और वह नुकसान उसको परेशान भी नहीं कर रहा था क्योंकि उसके पास तो उसका थैला था जिसमें से वह चाहे जितना पैसा निकाल सकता था।

पिछले तीन दिनों में वह इतना हार चुका था कि शैतान ने सोचा कि जरूर ही वह दुनियॉ का सबसे अमीर आदमी होगा तभी तो वह इतना हार चुका था और उसके माथे पर शिकन तक नहीं थी।

पर वह भी इस बात पर तुला हुआ था कि वह उसको कंगाल बना कर ही छोड़ेगा।

वह फ्रान्सिस को एक तरफ ले गया और उससे बोला — "ओ भले राजकुमार, मैं तुमको बता नहीं सकता कि मैं तुम्हारी इस बदकिस्मती पर कितना दुखी हूँ पर फिर भी मेरे पास तुम्हारे लिये एक खुशखबरी है। तुम मेरी बात को ध्यान से सुनोगे तो जितना तुमने खोया है उसमें से कम से कम आधा तो तुम वापस ले ही लोगे।"

फ्रान्सिस ने पूछा — "कैसे?"

शैतान ने इधर उधर देखा और उसके कान में फुसफुसाया — "तुम अपनी आत्मा मुझे बेच दो।"

फ्रान्सिस बोला — "आह, सो मेरे लिये तुम्हारी यह सलाह है ओ शैतान? चलो तो मेरे थैले में कूद जाओ।"

यह सुन कर शैतान ने वहॉ से भागने की कोशिश की पर वह उस थैले से तो बच नहीं सकता था। वह सिर के बल उस थैले में गिर पड़ा।

फ्रान्सिस ने थैला बन्द किया और अपनी डंडी से बोला — "अब इसकी अच्छी तरह से पिटायी करो।" बस उसकी डंडी ने शैतान की ज़ोर ज़ोर से पिटायी करनी शुरू कर दी।

शैतान का शरीर मरोड़ खाने लगा, वह चिल्लाने लगा, फ्रान्सिस को गालियॉ देने लगा — "मुझे इस थैले में से निकालो। इस डंडी को रोको। तुम तो मुझे मार ही डालोगे।"

"क्या सचमुच में? तुम यहीं मरोगे। बस वही तुम्हारे लिये सबसे बड़ा नुकसान होगा।" और वह डंडी उसको पीटती रही।

तीन घंटे की पिटायी के बाद फ्रान्सिस बोला — "आज के लिये तुम्हारे लिये बस इतना ही काफी है।"

शैतान ने बड़ी कमजोर आवाज में पूछा — "मुझे यहॉ से आजाद करने की तुम क्या कीमत लोगे?"

"तुम ध्यान से मेरी बात सुनो। अगर तुम अपनी आजादी चाहते हो तो तुम उन सब आत्माओं को छोड़ दो जिन्होंने तुम्हारी वजह से आत्महत्या की है।"

"ठीक है सौदा पक्का रहा।"

"तब बाहर आ जाओ। पर साथ में यह भी याद रखना कि अगर तुमने कुछ भी गड़बड़ी की तो मैं तुमको किसी भी समय जब भी मैं चाहूँ फिर से पकड़ सकता हूँ।"

शैतान तो अपने वायदे से वापस जाने की हिम्मत ही नहीं कर सकता था। वह तुरन्त ही जमीन के नीचे जा कर गायब हो गया और तुरन्त ही कुछ लोगों को ले कर बाहर आ गया। उन सबके चेहरे पीले पड़े हुए थे और उनकी ऑखें बीमार जैसी लग रही थीं।

फ्रान्सिस उन लोगों से बोला — "दोस्तों, तुम लोगों ने अपने आपको जुआ खेल कर बरबाद कर लिया था और फिर तुम्हारे पास अपने आपको मारने के अलावा और कोई रास्ता नहीं रह गया था।

मैं तुम लोगों को इस बार तो वापस ले आया पर अगली बार शायद मैं ऐसा न कर सकूँ इसलिये तुम लोग मुझसे वायदा करो कि तुम लोग अब से जुआ नहीं खेलोगे।"

सब लोग एक आवाज में बोले — हॉ हॉ हम वायदा करते हैं कि हम आज से जुआ नहीं खेलेंगे।"

"बढ़िया। लो तुम सब लोग एक एक हजार क्राउन लो और शान्ति से अपने अपने घर जाओ और ईमानदारी से अपनी रोटी कमाओ खाओ।"

वे नौजवान खुश हो कर वहॉ से चले गये। कुछ के परिवार उनकी मौत पर रो रहे थे, कुछ लोग अपने माता पिता के बुरे कामों की वजह से उनकी मौत पर दुखी थे।

यह देख कर फ्रान्सिस को अपने बूढ़े पिता की याद आ गयी सो वह भी अपने गॉव चल दिया। रास्ते में उसको एक लड़का मिला जो बड़ी नाउम्मीदी में अपने हाथ मल रहा था।

फ्रान्सिस ने उससे पूछा — "क्या बात है नौजवान कैसे हो? क्या तुम ये दुखी चेहरे ही बेचते हो? एक दर्जन ऐसे चेहरे कितने के दोगे?"

लड़का बोला — "मैं हॅस नहीं सकता। मैं क्या करूॅ।"

"क्यों क्या बात है।"

लड़का बोला — "मेरे पिता एक लकड़हारे का काम करते हैं और वह अकेले ही परिवार का पालन पोषण करते हैं। आज सुबह वह एक चेस्टनट के पेड़ से गिर पड़े। इससे उनकी एक बॉह टूट गयी है।

मैं डाक्टर को बुलाने के लिये शहर दौड़ा गया पर क्योंकि हम गरीब हैं। मैं उसको पैसे नहीं दे सकता था सो उसने आने से मना कर दिया।"

"क्या इसी वजह से तुम दुखी हो रहे हो। शान्त हो जाओ। चलो मेरे साथ चलो मैं देखता हूॅ।"

"क्या आप डाक्टर हैं?"

"नहीं मैं तो डाक्टर नहीं हूँ पर मैं उस डाक्टर को बुला सकता हूँ जिसने तुमको आने से मना कर दिया। क्या नाम है उस डाक्टर का?"

"डाक्टर पैनक्रेज़ियो[35]।"

"ठीक है। डाक्टर पैनक्रेज़ियो, आओ मेरे थैले में कूद जाओ।" उसी समय वह डाक्टर अपने सब औजारों के साथ उसके थैले में आ गया।

फिर फ्रान्सिस बोला — "ओ डंडी अपनी पूरी ताकत के साथ इसको पीटो।" बस उस डंडी ने उस डाक्टर को अपनी पूरी ताकत के साथ पीटना शुरू कर दिया।

कुछ देर बाद फ्रान्सिस ने उस डाक्टर से पूछा — "क्या तुम इस लड़के के पिता का इलाज बिना कोई पैसा लिये करोगे?"

"जो भी आप कहें।"

"तो ठीक है थैले से बाहर आ जाओ।" बाहर आते ही डाक्टर उस लकड़हारे के घर की तरफ भाग गया।

फ्रान्सिस फिर अपने रास्ते चल दिया और कुछ ही दिनों में अपने गॉव आ पहुँचा। वहॉ तो अब पहले से भी ज़्यादा लोग भूखे मर रहे थे।

वह अपने थैले से बार बार कहता रहा — "भुना हुआ मुर्गा और शराब की बोतल थैले में कूद जा।"

[35] Pancrazio – name of the Doctor

फ्रान्सिस ने उस थैले से गॉव के सब लोगों को खूब खाना खिलाया और सब लोगों ने बहुत दिन बाद बिना पैसे के इतना स्वादिष्ट खाना खाया।

वह यह सब उन लोगों के लिये तब तक करता रहा जब तक वहॉ अकाल चला। जब वहॉ की दशा कुछ सुधर गयी तब उसने वह सब बन्द कर दिया क्योंकि इससे लोगों का आलसीपन बढ़ता था।

X X X X X X X

पर क्या तुम सोचते हो कि वह खुश था? नहीं। वह अपने ग्यारह भाइयों की कोई खबर न मिलने पर बहुत दुखी था। वह बहुत दिनों से उनको भूला हुआ था क्योंकि वे उसको उस अपंग हालत में अकेला छोड़ कर भाग गये थे।

फिर उसने उनको बुलाने की कोशिश की — "भाई जौन आ मेरे थैले में कूद जा।"

उसके यह कहते ही उसके थैले में कुछ हिला। फ्रान्सिस ने उसको खोला तो उसमें उसको हड्डियों का एक ढेर मिला।

फिर वह बोला — "भाई पौल आ मेरे थैले में कूद जा।" फिर एक और हड्डियों का ढेर थैले में आ पड़ा।

इस तरह उसने अपने ग्यारहों भाइयों के नाम ले ले कर उनको अपने थैले में बुलाया पर हर बार एक हड्डियों का ढेर उस थैले में

आ कर गिर जाता। अब उसको कोई शक नहीं था कि उसके सारे भाई एक साथ ही मर गये थे।

यह देख कर फ्रान्सिस बहुत दुखी था। उसका पिता भी उसको अकेला छोड़ कर मर गया था। अब बूढ़े होने की उसकी बारी थी।

अब बस उसकी एक ही आखिरी इच्छा थी कि वह केनो झील की परियों की रानी को एक बार फिर से देख ले जिसने उसको इतना अमीर बनाया था।

सो वह उसी जगह चल दिया जहॉ वह उसको पहली बार मिला था। वह वहॉ इन्तजार करता रहा करता रहा पर वह परी नहीं आयी।

वह बड़ी प्रार्थना भरी आवाज में बोला — "कहॉ हो तुम ओ परियों की रानी। मेहरबानी कर के तुम एक बार मेरे सामने और आओ। मैं तुमको फिर से देखे बिना तो मर भी नहीं सकता।"

रात होने लगी थी और परी के आने का उसको कोई संकेत भी दिखायी नही दे रहा था बल्कि उसने देखा कि परी की जगह तो उसके सामने से उसकी मौत चली आ रही थी।

उसके एक हाथ में काला झंडा था और दूसरे हाथ में उसका हल जैसा पेड़ काटने वाला एक औजार था।

वह फ्रान्सिस के पास आयी और बोली — "ओ बूढ़े, क्या तुम अपनी ज़िन्दगी से थक नहीं गये हो? क्या तुम पहाड़ों पर काफी नहीं

चढ़ लिये हो? क्या तुमने दुनियॉ के सारे काम काफी नहीं कर लिये हैं और क्या तुम अब मेरे साथ आने के लिये तैयार नहीं हो?"

बूढ़े फ्रान्सिस ने कहा — "ओ मौत। भगवान तुमको बनाये रखे। तुम ठीक कहती हो। मैंने दुनियॉ में बहुत कुछ देख लिया बल्कि हर चीज़ देख ली है। मैं सब चीज़ों से सन्तुष्ट हो गया हूॅ पर तुम्हारे साथ आने से पहले मैं किसी को विदा कहना चाहता हूॅ। मेहरबानी कर के मुझे एक दिन की मोहलत और दो।"

"अगर तुम किसी नास्तिक की तरह से मरना नहीं चाहते तो तुम अपनी प्रार्थना कर लो और फिर जल्दी से मेरे पीछे पीछे आ जाओ।"

"मेहरबानी कर के सुबह जब तक मुर्गा बोलता है मुझे तब तक की मोहलत दे दो।"

"नहीं।"

"अच्छा तो एक घंटा और, बस।"

"एक मिनट भी ज़्यादा नहीं।"

फ्रान्सिस बोला — "क्योंकि तुम इतनी बेरहम हो तो आओ मेरे थैले में कूद जाओ।"

मौत डर के मारे कॉप गयी। उसकी सारी हड्डियॉ चरचरा उठीं और वह फ्रान्सिस के थैले में जा कर गिर पड़ी।

उसी समय वह केनो झील की परियों की रानी वहॉ प्रगट हो गयी। वह अभी भी उतनी ही शानदार लग रही थी जितनी वह तब लग रही थी जब वह उसको पहली बार मिली थी।

फ्रान्सिस बोला — "मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूॅ ओ परियों की रानी।"

फिर वह मौत से बोला — "मेरा काम हो गया अब तुम मेरे थैले में से बाहर निकल जाओ और मुझे ले चलो।"

परी बोली — "फ्रान्सिस तुमने कभी भी अपनी उन ताकतों का गलत इस्तेमाल नहीं किया जो मैंने तुमको दी थीं। तुमने हमेशा ही अपने थैले और डंडी का बहुत अच्छा इस्तेमाल किया। अगर तुम मुझे अपनी कोई इच्छा बताओ तो इस समय मैं तुम्हारी वह इच्छा भी पूरी करूॅगी।"

फ्रान्सिस बोला — "नहीं, अब मेरी कोई इच्छा नहीं है।"

"क्या तुम सरदार बनना चाहते हो?"

"नहीं।"

"क्या तुम राजा बनना चाहते हो?"

"नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिये।"

परी ने फिर पूछा — "अब क्योंकि तुम बूढ़े हो गये हो क्या तुम को तन्दुरुस्ती और जवानी चाहिये?"

"अब मैंने तुमको देख लिया है तो अब मैं शान्ति से मरने के लिये तैयार हूॅ।"

"अच्छा विदा फ्रान्सिस। पर मरने से पहले यह थैला और यह डंडी जला दो।" और यह कह कर परी गायब हो गयी।

फ्रान्सिस ने एक बड़ी सी आग जलायी। कुछ देर के लिये अपने शरीर को गरम किया और अपना थैला और डंडी उस आग में फेंक दी ताकि उनका कोई गलत इस्तेमाल न कर सके।

अब तक मौत एक झाड़ी के पीछे छिपी हुई खड़ी थी। सुबह हो गयी थी। मुर्गा चिल्लाया — "कुॅकडू कू।" पर फ्रान्सिस उसकी आवाज नहीं सुन सका क्योंकि मौत ने उसको बहरा कर दिया था।

मौत बोली — "देखो मुर्गा बोल रहा है।"

कह कर उसने अपने औजार से उसको मारा और उसके मरे हुए शरीर को अपने साथ ले कर वहॉ से चली गयी।

7 भालू की खाल[36]

एक बार एक नौजवान सिपाही था जिसने बहादुरी के बहुत सारे काम किये थे और जो जब गोलियों की बरसात होती थी तो सबसे आगे रहता था। जब तक लड़ाई चलती रही तब तक सब कुछ ठीक था पर जब शान्ति हो गयी तो अब उसका कोई काम नहीं रहा सो उसे निकाल दिया गया।

कप्तान ने उससे कहा कि वह अब आजाद था और कहीं भी आ जा सकता था तो वह अपने भाइयों के पास चला गया और उनसे कहा कि जब तक दोबारा कोई लड़ाई नहीं छिड़ती है तब तक वे उसे अपने पास रख लें।

उसके भाई लोग दिल के बहुत अच्छे नहीं थे। वे बोले — "अब हम तुम्हारा क्या करें तुम तो हमारे किसी काम के नहीं हो सो अब तुम अपनी जीविका खुद ही कमाओ।"

सिपाही के पास अपनी बन्दूक के अलावा और कुछ भी नहीं था। उसने अपनी बन्दूक अपने कन्धे पर रखी और दुनियॉ में निकल पड़ा।

चलते चलते वह एक बहुत बड़े घास के मैदान में आ निकला जहॉ केवल छोटी छोटी झाड़ियॉ उगी हुई थीं पर वहॉ कुछ पेड़ एक गोले में उगे हुए थे।

[36] Bearskin. By Grimm Brothers. Taken from : https://fairytalez.com/bearskin/

वह उन पेड़ों में से एक पेड़ के नीचे बैठ गया और अपनी किस्मत के बारे मे सोचने लगा। उसने सोचा "मेरे पास कोई पैसा नहीं है। मुझे सिवाय लड़ने के और कोई काम भी नहीं आता। अब क्योंकि शान्ति का समय है तो सरकार को मेरी सेवाओं की भी जरूरत नहीं है। मुझे साफ दिखायी दे रहा है कि मैं तो भूख से मर ही जाऊँगा।"

तभी उसने कुछ सरसराहट की सी आवाज सुनी। उसने अपने चारों तरफ देखा तो अपने सामने एक अजीब से आदमी को खड़े पाया। उसने हरा कोट पहना हुआ था लेकिन उसके पैरों के हिस्से हो रखे थे।

वह बोला — "मुझे मालूम है कि तुम्हें क्या चाहिये। तुम्हारे पास सोना और बहुत सारी चीज़ें होंगी जिनसे तुम और बहुत सारे काम कर सकते हो। पर पहले मुझे मालूम होना चाहिये कि तुम निडर हो ताकि मैं अपना पैसा बेकार के आदमी पर खर्च न करूँ।"

सिपाही हॅस कर बोला — "सिपाही और डर? तुम दोनों में कोई सम्बन्ध कैसे जोड़ सकते हो?"

आदमी बोला — "क्या तुम इसका कोई सबूत दे सकते हो?"

"हॉ हॉ।"

"तो पीछे मुड़ कर देखो।"

सिपाही ने पीछे मुड़ कर देखा तो वहॉ तो एक भालू उसकी तरफ बढ़ा चला आ रहा था।

उसे देख कर वह बोला — "ओहो। मैं तेरी नाक पर गुदगुदी कर दूँगा ताकि तू फिर अपना गुर्राना भूल जाये।" कह कर उसने उसकी नाक पर मारा। इससे वह नीचे गिर पड़ा और फिर कभी नहीं हिला।

अजनबी बोला — "अब मैंने देख लिया है कि तुम्हारे अन्दर साहस की कोई कमी नहीं है पर एक शर्त और है जो तुम्हें पूरी करनी है।"

सिपाही यह जानता था कि उसके सामने कौन खड़ा है इसलिये वह बोला — "अगर वह मेरी मुक्ति में कोई दखल न देती हो तो। पर अगर वह ऐसा करती है तो मेरा उससे कोई मतलब नहीं है।"

हरे कोट पहनने वाला बोला — "यह तुम अपने आप ही देख लेना। अगले सात साल तक न तो तुम नहाओगे। न तुम अपने बालों में और न अपनी दाढ़ी में कंघी करोगे। न तुम अपने नाखून काटोगे। न तुम अपनी प्रार्थना की एक भी लाइन पढ़ोगे। मैं तुम्हें एक कोट और एक शाल दूँगा इन सात सालों में तुम वही पहनोगे।

इन सात सालों में अगर तुम मर गये तो तुम मेरे हो और अगर ज़िन्दा रहे तो फिर तुम आजाद हो और हमेशा अमीर रहोगे।"

सिपाही ने इस स्थिति जिसमें वह पड़ गया था के बारे में सब कुछ सोच कर यह खतरा मोल लेने का विचार किया क्योंकि वह तो अक्सर ही मौत का सामना करता रहता था साप वह उसकी रखी गयी शर्तों को मान गया।

शैतान ने अपना हरा कोट उतारा और सिपाही को दे दिया। फिर वह बोला — "जब भी यह कोट पहन कर तुम इसकी जेब में हाथ डालोगे तब तब तुमको यह पैसों से भरी पूरी मिलेगी।"

फिर उसने भालू की खाल उतारी और सिपाही को देते हुए कहा –"यह तुम्हारा शाल है। आज से तुम इस शाल पर ही सोओगे किसी और बिस्तर पर नहीं। और इस पहनावे के कारण तुम "भालू की खाल वाले"[37] कहलाओगे।"

यह कह कर भालू की खाल वाला वहॉ से गायब हो गया।

सिपाही ने पहले कोट पहना और तुरन्त ही उस कोट की सच्चाई जॉचने के लिये उसने उस कोट की जेब में अपने हाथ डाल दिये। उसने देखा कि जो कुछ शैतान ने कहा था वह तो सच ही था।

उसके बाद उसने भालू की खाल ओढ़ी और मस्ती से दुनियॉ में घूमने चल दिया। अब उसे किसी बात की चिन्ता नहीं थी। पहले साल में उसे यह सब कुछ ठीक सा लगा पर दूसरे साल में वह एक राक्षस सा लगने लगा।

उसका करीब करीब सारा चेहरा बालों से ढक गया था। उसकी दाढ़ी बहुत बढ़ गयी थी। उसे हाथ किसी जानवर के पंजों जैसे लगने लगे थे। उसका चेहरा धूल मिट्टी से इतना भर गया था कि अगर उस धूल में कोई घास भी बोयी जाती तो वह उग आती।

[37] Bearskin

जो भी उसे देखता वह उसे देखते ही भाग जाता पर जहॉ भी वह जाता वह गरीबों को दान देता और उनसे अपने लिये यह प्रार्थना करने के लिये कहता कि वह इन सात सालों में कभी मरे नहीं।

क्योंकि उसके पास बहुत पैसा था और वह सबको अच्छी तरह से देता था तो उसे किसी चीज़ की कोई कमी नहीं थी।

चौथे साल में वह एक सराय में घुसा पर वहॉ सराय के मालिक ने उसे अन्दर आने से मना कर दिया। यहॉ तक कि वह उसे अपनी घुड़साल में भी ठहरने की जगह न दे क्योंकि उसे डर था कि उसे देख कर उसके घोड़े उससे डर जायेंगे।

लेकिन भालू की खाल वाले ने जब अपनी जेब में हाथ डाल कर मुट्ठी भर कर डकैट[38] निकाले तब तो वह खुद ही उससे अपनी सराय में ठहरने की जिद करने लगा और उसे बाहर के घर में एक कमरा दे दिया।

भालू की खाल वाले ने भी उससे वायदा किया कि वह वहॉ से बाहर नहीं निकलेगा ताकि सराय का नाम बदनाम न हो।

एक दिन वह शाम को अकेला बैठा हुआ था और दिल से इच्छा कर रहा था कि उसके वह सात साल जल्दी से खत्म हो जायें कि उसने बराबर वाले कमरे से ज़ोर ज़ोर से रोने की आवाज सुनी।

[38] Ducat was the currency of Europe at that time

वह बहुत दयालु था सो उसने बराबर वाले कमरे का दरवाजा खोला। उसने देखा कि एक बूढ़ा हाथ मल कर बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रो रहा था। भालू की खाल वाला उसके पास गया पर उसे देख कर वह बूढ़ा डर कर उछल पड़ा और उससे बच कर भागने की कोशिश करने लगा।

पर जब उसने देखा कि भालू की खाल वाले को आदमी की आवाज में बोलते सुना तो वह रुक गया और भालू की खाल वाला अपने कोमल शब्दों से बूढ़े का दुख जानने में सफल हो गया।

उसकी जायदाद सब इधर उधर हो गयी थी और अब उसकी बेटियॉ खाने को तरस रही थीं। वह इतना गरीब था कि सराय के मालिक को भी पैसे देने लायक नहीं था सो उसे जेल जाना पड़ रहा था।

भालू की खाल वाले ने पूछा — "क्या केवल तुम्हारी यही समस्या है तो मेरे पास काफी पैसा है।" कह कर उसने सराय के मालिक को बुलाया और उस बूढ़े पर चढ़ा पैसा उसे दिया। इसके अलावा सोने का भरा हुआ बटुआ उसने बूढ़े की जेब में रख दिया।

जब गरीब बूढ़े ने देखा कि उसकी सारी समस्याऐं समाप्त हो गयीं है तो वह यही नहीं जानता था कि वह उस भालू की खाल वाले का किस प्रकार धन्यवाद करे ।

उसने भालू की खाल वाले से कहा — "आओ मेरे साथ। मेरी बेटियॉ बहुत सुन्दर हैं तुम उनमें से एक से शादी कर लो। जब वह

यह सुनेगी कि तुमने मेरे लिये क्या किया है तो वह ना नहीं कर पायेंगी। चिन्ता मत करो वे तुम्हें जल्दी ही ठीक कर लेंगी।"

यह सुन कर भालू की खाल वाला बहुत खुश हो गया और उसके साथ चल दिया। जब वह उसके घर पहुँचा तो उसकी सबसे बड़ी बेटी ने उसे पहले देखा तो वह तो उसे देख कर डर ही गयी। वह डर के मारे चिल्लायी और अन्दर भाग गयी।

दूसरी ने उसे देखा तो वह उसे देखती ही रह गयी। उसने उसे सिर से पैर तक देखा और फिर बोली — "मैं किसी ऐसे से शादी कैसे कर सकती हूँ जो आदमी की शक्ल का ही नहीं है।

वह भालू जो दाढ़ी बना कर आया था वह मुझे इससे कहीं ज़्यादा पसन्द था। कम से कम उसने ठीक से कपड़े पहन रखे थे। दस्ताने पहन रखे थे। अगर वह बदसूरत न होता तो मैं उससे शादी कर लेती फिर मैं उसे देख लेती।"

उसकी सबसे छोटी बेटी बोली — "पिता जी वह आदमी तो बहुत अच्छा होगा जिसने आपकी इस मुश्किल में सहायता की। इसलिये अगर आपने उससे वायदा किया है कि आप अपनी एक बेटी की शादी इससे करेंगे तो आपका वायदा तो निभाना ही पड़ेगा।"

यह बड़े दुख की बात थी कि भालू की खाल वाले का चेहरा धूल और बालों से ढका हुआ था वरना वे देख लेते कि वह ये शब्द सुन कर कितना खुश था।

उसने तुरन्त ही एक अँगूठी अपनी उंगली से निकाली उसे दो हिस्सों में तोड़ा और उसका एक हिस्सा बूढ़े की बेटी को दे दिया। अँगूठी का दूसरा हिस्सा उसने अपने पास रख लिया। उसने उसके हिस्से पर अपना नाम लिख दिया और अपने हिस्से पर उसका नाम लिख लिया।

उसने उससे कहा कि वह उसकी अँगूठी का आधा हिस्सा सँभाल कर रखे। फिर वह वहाँ से उससे यह कह कर चल दिया — "मुझे अभी तीन साल तक और घूमना है तब तक तुम मेरा इन्तजार करना। अगर मैं तब न आऊँ तो तुम इस बन्धन से आजाद हो क्योंकि तब मैं मर जाऊँगा। इतने समय तुम भगवान से मेरी लम्बी ज़िन्दगी के लिये प्रार्थना करती रहना।"

बेचारी दुलहिन ने काले कपड़े पहन लिये और जब भी वह अपने होने वाले पति के बारे में सोचती तो उसकी आँखों में आँसू आ जाते। उसकी बहिनें उसका मजाक उड़ातीं।

सबसे बड़ी बहिन कहती — "ख्याल रखना। अगर तूने उसे अपना हाथ दिया तो वह तेरे हाथों में अपने पंजे घुसा देगा।"

दूसरी बहिन बोली — "बच कर रहना। भालुओं को मीठी चीज़ें बहुत अच्छी लगती हैं। अगर उसे तू ही अच्छी लग गयी तो वह तुझे ही खा जायेगा।"

बड़ी बहिन फिर बोली — "तुझे हमेशा वही करना चाहिये जो वह चाहे नहीं तो वह गुर्रायेगा। पर हॉ शादी में बड़ा मजा आयेगा क्योंकि भालुओं को नाचना बहुत अच्छा आता है।"

इतना सब सुनने के बाद भी वह अपनी बहिनों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देती थी।

इस बीच भालू की खाल वाला इधर उधर घूमता रहा। जिस जिसके लिये जो जो सम्भव था उसका वह उसी तरीके से भला करता रहा। वह लोगों को खुले दिल से दान देता रहा ताकि वह उसकी लम्बी उम्रके लिये प्रार्थना करते रहें।

आखिर सात साल का आखिरी दिन आ पहुॅचा। वह एक बार फिर उसी मैदान में जा पहुॅचा जहॉ उसे वह शैतान मिला था और जा कर पेड़ों के घेरे में एक पेड़ के नीचे बैठ गया।

कुछ ही देर में बहुत ज़ोर से हवा की आवाज आयी और शैतान वहॉ हाजिर था। उसने भालू की खाल वाले की तरफ गुस्से से देखा और उसका अपना कोट उसकी तरफ फेंक कर उससे अपना हरा कोट मॉगा।

भालू की खाल वाले ने कहा — "हम अभी वहॉ तक नहीं पहुॅचे हैं। तुम पहले मुझे साफ करो।"

अब यह शैतान को यह अच्छा लगा या नहीं पर उसको वहॉ पानी लाना पड़ा। उसे नहलाना पड़ा। उसके बालों में कंघी करनी पड़ी। उसके नाखून काटने पड़े।इसके बाद तो वह नौजवान वीर

सिपाही दिखायी देने लगा। इसके अलावा वह पहले से भी अधिक सुन्दर हो गया था।

जब शैतान चला गया तो वह बहुत ही हल्का महसूस करने लगा। वह शहर गया और एक बढ़िया सा मखमल का कोट खरीद कर पहना। चार घोड़ों से खींची जाने वाले एक गाड़ी में बैठा और अपनी दुलहिन के घर चला।

किसी ने उसे पहचाना नहीं। बूढ़ा यह सोच कर उसे घर के अन्दर ले गया कि वह एक इज़्ज़तदार जनरल है। वहॉ उसकी बेटियॉ बैठी हुई थीं। बूढ़े ने उसे अपनी दोनों बड़ी बेटियों के बीच में बिठा दिया।

उन्होंने उसे वाइन पिलायी। उसे सबसे अच्छे मॉस के टुकड़े खिलाये। उनको लगा कि दुनियॉ में उससे सुन्दर आदमी उन्होंने कभी देखा ही नहीं है। दुलहिन अपने काले कपड़े पहने हुए उन तीनों के सामने बैठी हुई थी। उसने अभी तक ऑख उठा कर नहीं देखा था और न वह एक शब्द बोली थी।

जब काफी देर बात हो गयी तो सिपाही ने बूढ़े से पूछा कि क्या वह अपनी एक बेटी की शादी उससे करेगा तो उसकी दो बड़ी बेटियॉ तुरन्त ही उठ कर अपने कमरे में अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहनने चली गयीं। क्योंकि उन दोनों को लगा कि उन्हीं को दुलहिन के लिये चुना गया है।

अजनबी जैसे ही अपनी होने वाली दुलहिन के साथ अकेला रह गया तो उसने अपनी टूटी हुई अॅगूठी का आधा हिस्सा निकाला और उसे वाइन के गिलास में डाल दिया और उस गिलास को उसे दे दिया। उसने वह गिलास उठाया पर जब उसने वह वाइन पी तो उसको उस गिलास में अॅगूठी का आधा हिस्सा मिला।

यह देख कर उसका दिल धड़कने लगा। उसने अपने गले में से उसकी दी हुई अॅगूठी का आधा हिस्सा निकाला और उन दोनों को जोड़ा तो पाया कि दोनों एक दूसरे के अन्दर पूरी तरीके से फ़िट हो रहे हैं।

तब सिपाही बोला — "मैं ही तुम्हारा होने वाला पति हूॅ जिसे तुमने भालू की खाल ओढ़े देखा था। भगवान की कृपा से अब मुझे आदमी की शक्ल मिल गयी है और अब मैं साफ हो गया हूॅ।" कह कर वह उसके पास गया उसे गले से लगाया और चूम लिया।

इस बीच बूढ़े की दोनों बड़ी बेटियॉ अपने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन कर सजधज कर बाहर आ गयीं। जब उन्होंने देखा कि उस सुन्दर आदमी ने उनका हिस्सा ले लिया है और सुना कि वही भालू की खाल वाला है तो वे गुस्से से भर कर वहॉ से भाग गयीं।

उनमें से एक ने कुॅए में कूद कर जान दे दी और दूसरी ने एक पेड़ से लटक कर जान दे दी।

शाम को किसी ने दरवाजा खटखटाया और जब दुलहे ने दरवाजा खोला तो वहॉ तो शैतान खड़ा था अपना हरा कोट पहने

हुए। वह बोला — "देखा तूने। तेरी आत्मा के बदले में मुझे दो आत्माऐं मिल गयीं।"

8 शैतान और उसकी दादी[39]

एक बार बहुत ज़ोर की लड़ाई हुई तो राजा के पास बहुत सिपाही थे पर वह उनको तनख्वाह बहुत थोड़ी देता था। इतनी थोड़ी देता था कि वह उसमें रह नहीं सकते थे। तो एक दिन उनमें से तीन लोगों ने यह निश्चय किया कि वे यह नौकरी छोड़ देंगे।

उनमें से एक ने दूसरे दोनों से कहा — "लेकिन हम अगर पकड़े गये तो हमें फॉसी पर लटका दिया जायेगा। हमको क्या करना चाहिये।"

दूसरा बोला — "वह मक्का का खेत देख रहे हो न। अगर हम उस खेत में छिप जाने में सफल हो जायें तो फिर हमें कोई नहीं ढूँढ पायेगा। क्योंकि फौज को इस खेत में जाने की इजाज़त नहीं है और कल तो वे सब चले ही जायेंगे।"

सो वे लोग मक्का के खेत में जा छिपे पर सिपाही लोग वहॉ से नहीं गये बल्कि उसके चारों ओर वहीं छिपे रहे। वे लोग मक्का के खेत में पूरे दो दिन और दो रात छिपे रहे। भूख की वजह से वे बेचारे मरने मरने को हो रहे थे पर अगर वे खेत से बाहर निकल आते तो तो निश्चित रूप से ही मर जाते।

वे आपस में बात करने लगे — "हमारे यहॉ छिपने का क्या फायदा जो हम इस तरह से मर रहे हैं।"

[39] The Devil and His Grandmother. A folktale from Germany bt Grimm Brothers.

तभी एक भयानक ड्रैगन उड़ता हुआ वहॉ आया और उनके पास नीचे उतर गया और उनसे पूछा कि वे वहॉ क्यों छिपे हुए थे। वे बोले — "हम तीन सिपाही हैं। हम राजा की सेना छोड़ कर इसलिये चले आये हैं क्योंकि वह हमें बहुत कम तनख्वाह देता है और अगर अब हम यहॉ रहे तो हम यहॉ मर जायेंगे और अगर बाहर गये तो वहॉ हमें फॉसी पर चढ़ा दिया जायेगा।"

ड्रैगन बोला — "तुम लोग मेरे लिये सात साल तक काम करोगे और बदले में मैं तुम्हें सेना में से निकाल कर ले जाऊॅगा ताकि कोई तुम्हें पहचान न सके।"

तीनों बोले — "हमारे पास और कोई रास्ता ही नहीं है सो हमें मंजूर है।"

ड्रैगन ने उन तीनों को अपने पंजों में पकड़ा और उन्हें सेना के ऊपर से हवा में उड़ा कर बाहर ले गया। वहॉ से काफी दूर बाहर ले जा कर उसने उन्हें जमीन पर उतार दिया।

पर यह ड्रैगन और कोई नहीं शैतान था। उसने उन्हें एक कोड़ा दिया और कहा — "इस कोड़े से मारो तो तुम्हारे आस पास इतना सारा सोना निकल आयेगा जितना तुम चाहोगे। उस सोने से फिर तुम लौर्ड की तरह से रह सकते हो। घोड़े रख सकते हो। अपनी अपनी गाड़ियॉ रख सकते हो। पर सात साल के बाद तुम लोगों के ऊपर मेरा अधिकार होगा।"

उसके बाद उसने उनके सामने एक किताब रखी जिसमें उन तीनों को जबरदस्ती दस्तखत करने पड़े। उसके बाद उसने उनसे कहा कि "सात साल बाद मैं तुम्हें एक पहेली दूँगा। अगर तुमने मुझे उसका जवाब बता दिया तो तुम मेरी पकड़ से आजाद हो जाओगे।"

इतना कह कर ड्रैगन वहॉ से उड़ गया और वे अपने हाथ में उसका कोड़ा और सोना ले कर चले गये। अपने लिये कीमती कपड़े खरीदे और दुनियॉ घूमी। वे जहॉ भी गये वहीं बड़े आनन्द में रहे। घोड़े पर सवारी की। गाड़ियों में घूमे। खूब खाया पिया पर कोई बुरा काम नहीं किया।

समय उड़ता रहा और जब सात साल खत्म होने को आये तो उनमें से दो लोग कुछ चिन्तित होने लगे। तीसरे ने उन्हें विश्वास दिलाया कि उन्हें इतनी अधिक चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। वह खुद चतुर है सो ड्रैगन की पहेली का कोई न कोई जवाब ढूँढ ही लेगा।

सात साल पूरे हो जाने पर वे तीनों एक खुली जगह में जा कर बैठ गये। उनमें से दो लोग बहुत दुखी थे। तभी वहॉ एक काफी उम्र वाली स्त्री आयी और उसने उनसे पूछा कि वे दुखी क्यों थे।

वे दोनों बोले — "पर इससे तुम्हारा क्या मतलब है। तुम हमारी कोई सहायता नहीं कर सकती।"

स्त्री बोली — "कौन जाने। पर तुम अपनी परेशानी तो मुझे बताओ।"

तो उन्होंने उसे बताया कि वे शैतान के चंगुल में सात साल से हैं उसने उन्हें इतना सारा सोना ऐसे दिया है जैसे कोई ब्लैकबैरीज़ देता है पर उन्होंने अपने आपको उसे बेच दिया है।

लेकिन सात साल खत्म होने के बाद वह हमसे एक पहेली पूछेगा जिसका जवाब हमने अगर सही सही दे दिया तो वह हमें छोड़ भी देगा। पर अगर हम नहीं बता सके तो हम उसके हो जायेंगे।

स्त्री बोली — "अगर तुम अपने आपको बचाना चाहते हो तो तुममें से एक को जंगल में जाना चाहिये। वहॉ वह एक टूटी हुई चट्टान के पास आयेगा जो घर जैसी दिखायी दे रही होगी। उसे उस घर में अन्दर घुस जाना चाहिये वहॉ जा कर उससे सहायता मॉगनी चाहिये।"

उनमें से जो दो उदास बैठे थे उन्होंने सोचा यह भी हमको बचा नहीं पायेगा सो वे वहीं बैठे रहे पर तीसरा जो खुश खुश बैठा था जंगल की तरफ चल दिया। वह चलता रहा जब तक कि वह उस चट्टान वाले घर के पास तक आ गया।

वह उस घर में घुसा तो उसने देखा कि वहॉ एक बुढ़िया बैठी हुई है। यह उस शैतान की दादी थी। उसने सिपाही से पूछा कि वह कहॉ से आया था और वहॉ वह उससे क्या चाहता था। उसने उसे अब तक जो कुछ हुआ था वह सब बता दिया।

यह सब सुन कर बुढ़िया बहुत खुश हुई और उसे सिपाही पर दया आ गयी। उसने उसे धीरज दिया कि वह उसकी सहायता अवश्य करेगी। उसने एक पत्थर उठाया जिसके नीचे एक कमरा था।

उसने उसे उसमें छिपने के लिये कहा और कहा — "तुम यहॉ छिप जाओ ताकि तुम यहॉ छिपे रह कर सब कुछ सुन सको। बस यहॉ चुपचाप बैठे रहना हिलना नहीं। जब ड्रैगन यहॉ आयेगा तब मैं उससे पहेली के बारे में पूछूँगी और वह मुझे सब कुछ बता देगा। यहॉ बैठे बैठे तुम उसका जवाब सुन लेना और फिर उसे बता देना।"

रात को बारह बजे ड्रैगन वहॉ उड़ता हुआ आया और उसने अपना खाना मॉगा। दादी ने उसके लिये खाना और शराब मेज पर लगा दी। खाना देख कर वह बहुत खुश हुआ। दोनों ने मिल कर खाना खूब प्रेम से खाया।

बात करते समय दादी ने ड्रैगन से पूछा कि उसका दिन कैसा और रहा उसने कितनी आत्माऐं अपने कब्जे में कीं।

ड्रैगन बोला — "आज का दिन कुछ खास अच्छा नहीं गुजरा पर आज मैंने तीन आत्माओं को पकड़ा हुआ है। वे मेरे पास सुरक्षित हैं।"

"क्या सचमुच। अगर तीन आदमी हैं तब तो बहुत अच्छा है पर वे तुमसे बच कर भाग भी तो सकते हैं।"

शैतान हॅस कर बोला — "वे मेरे हैं। मुझे उनसे एक पहेली पूछनी है जिसका हल वे कभी भी नहीं बूझ सकेंगे।"

दादी ने पूछा — "और वह पहेली क्या है।"

"मैं तुम्हें बताता हूॅ। उत्तरी समुद्र में नीचे तली में एक मरी हुई मछली पड़ी हुई है उसका भुना हुआ मॉस तुम्हारा खाना बनेगी और व्हेल की हड्डी की तुम्हारी चॉदी की चम्मच होगी। एक बूढ़े घोड़े का खुर तुम्हारी शराब का प्याला होगा।"

जब शैतान सोने चला गया तो उसकी दादी ने नीचे वाले कमरे के ऊपर रखा पत्थर उठाया और सिपाही को वहॉ से बाहर निकाला। उसने सिपाही से पूछा कि क्या उसने उसके पोते की हर बात पर ध्यान दिया या नहीं।"

सिपाही बोला — "हॉ मैंने उसकी सब बातें ध्यान से सुनी और अब मैं उससे बचने की पूरी पूरी कोशिश करूॅगा।"

उसके बाद उसे दूसरे रास्ते से यानी खिड़की के रास्ते से उस घर से बाहर निकलना पड़ा। बाहर निकल कर वह तुरन्त ही अपने साथियों के पास पहुॅच गया। वहॉ जा कर उसने अपने साथियों को बताया कि किस तरह से वह शैतान की दादी से मिल कर उसके बारे में जान सका। और फिर किस तरह से उसकी पहेली का जवाब जान सका।

यह सुन कर वहॉ बैठे दोनों सिपाही बहुत खुश हुए। उन्होंने अपना कोड़ा उठाया और उससे इतना सारा सोना निकाल लिया कि वह उनके आस पास चारों तरफ बिखर गया।

जब सात साल पूरे हो गये तो शैतान अपनी किताब ले कर उनके पास आया उन्हें उनके दस्तखत दिखाये और बोला "अब मैं तुम लोगों को अपने साथ नरक ले जाऊॅगा। अब तुम अपना खाना वहीं खाना।

अगर तुम सोच सको कि वहॉ तुम्हें किस तरह का भुना हुआ मॉस मिलेगा और वह मुझे बता दो तो मैं तुम्हें छोड़ दूॅगा और यह कोड़ा भी मैं तुम्हें ही दे दूॅगा।

पहला सिपाही बोला — "उत्तरी समुद्र में नीचे एक मरी हुई मछली पड़ी हुई है। हमें इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि हमें उसी का भुना हुआ मॉस खाने को मिलेगा।"

यह सुन कर शैतान बहुत गुस्सा हुआ पर फिर दूसरे सिपाही से पूछा — "और फिर चम्मच किस चीज़ की बनी होगी?"

दूसरा सिपाही बोला — "व्हेल की हड्डी की। वही हमारी चॉदी की चम्मच होगी।"

शैतान ने बुरा सा मुॅह बनाया और तीसरे सिपाही पर चिल्लाया — "और क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारी वाइन का गिलास कौन सा होगा?"

तीसरे सिपाही ने जवाब दिया — "बूढ़े घोड़े के खुर का गिलास ही हमारा वाइन का गिलास होगा।"

यह सुन कर शैतान एक बहुत ही ज़ोर की आवाज के साथ भाग गया। उसके बाद उसका उन तीनों सिपाहियों के ऊपर कोई अधिकार नहीं रहा। उसका कोड़ा भी उनके पास ही रह गया। अब वह कभी भी कितना भी सोना निकाल सकते थे।

जब तक वे ज़िन्दा रहे तब तक खूब खुशी खुशी रहे।

Names of Jesus' 12 Apostles –

1. Simon Peter (brother of Andrew) - He was active in bringing people to Jesus – Bible writer
2. James (son of Zebedee and other brother of John) also called James the Greater
3. John of Zebedee and brother of James) – Bible writer
4. Andrew (brother of Simon Peter) – He was active in bringing people to Jesus
5. Philip od Bethsaida
6. Thomas (Didymus)
7. Bartholomew (Nathaniel) – He was one of the disciples to whom Jesus appeared at the Sea of Tiberias after his Resurrection. He was witness of the Ascension
8. Matthew (Levi) of the Capernaum
9. James (son of Alphaeus), also called "James the Lesser" Bible writer
10. Simon the Zealot (the Canaanite)
11. Thaddaeus-Judas (Lebbaeus) – brother of James the Lesser and brother of Matthew (Levi) of the Capernaum
12. Judas Iscariot who also betrayed him

The New Testament says the end of only two Apostles – Judas who betrayed Jesus and then killed himself; and James the son of Zebedee who was executed by Herod.

Soldier and Death Like Stories

1. Soldier and Death
2. The Soldier and the Devil
3. The Card Player – 1
4. Card Player – 2
5. Death Shut in a Bottle
6. Jump Into My Sack
7. Bearskin
8. Death's Messenger

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (13 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (11 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Ping King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022